चन्दामामा
अगस्त १९६२

वे किस विषय में इतने तल्लीन है ?...

...दी बैंक औफ इन्डिया लि. में एक
सेविंग्ज बैंक खाता—और **अपनी पास बुक !**
बैंक में पैसा बढ़ता देख कितना मजा आता है ? ... बच्चों को जीवन
के शुरु में ही **बचत करने की आदत**
डालने दीजिये।

विशेष सुविधायें ■ प्रतिवर्ष <u>१०० चेक</u> तक कभी भी, चाहे जितनी रकम
बगैर सूचना निकाल सकते हैं—और आपकी बचत पर
■ प्रतिवर्ष ३% चक्रवृद्धि ब्याज भी मिलता रहेगा।

दी बैंक औफ इन्डिया लि.

टी. डी. कन्सारा, जनरल मैनेजर

चन्दामामा

अगस्त १९६२

विषय - सूची

★

एक प्रति ५० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ६-००

गर्म मौसम आप को कभी परेशान नहीं करेगा....

घमौरियों से पूरी सुरक्षा के लिए
इस्तेमाल कीजिये

रेमी

रेमी बोरेटेड
टाल्कम पाउडर
- टायलट * डस्टिंग
- फेस पाउडर भी सुलभ है।

एकमात्र वितरक : ए.बी.आर.ए. एंड कम्पनी, बम्बई—२, मद्रास—१, कलकत्ता—१

वॉटरबरीज़
लाल लेबल
कम्पाउन्ड
सर्दी-ज़ुकाम और खांसी
के लिये।

इसमें ये चार गुण हैं:—

१

२

३

४

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड

लाल लेबल

अगस्त १९६२

मैं "चन्दामामा" पिछले साल से पढ़ रहा हूं। "चन्दामामा" पूरे परिवार के लिए मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक पत्रिका है। इसमें मनचाहे कहानियाँ एवं चित्र रहते हैं। जुलाई १९६२ के "चन्दामामा" में "नौकर की चालाकी" श्रेष्ठ कहानी है। "संसार के आश्चर्य" बेकार है इसके बदले में कार्टून चित्र या वर्गपहेली होनी चाहिए।

कृतिवास नायक, बिलासपुर (म.प्र.)

मैंने बहुत-सी पत्रिकायें पढ़ीं, लेकिन इनमें कोई आनन्द नहीं आया। परन्तु जब से मैंने चन्दामामा पढ़नी शुरु की है। यह मुझे बहुत ही अच्छी लगी है। क्योंकि इसमें सभी मनोरंजक सामग्री मिल जाती हैं। यही नहीं इसमें हास्य तथा भयंकर घाटी जैसी कथायें छापी जाती हैं।

ज्ञानप्रकाश चन्दोसी

विगत कई वर्षों से मैं 'चन्दामामा' का पाठक हूं। संपूर्ण हिन्दी प्रकाशन में, मुझे 'चन्दामामा' के समान आकर्षक मासिक पत्रिका देखने को नहीं मिली है।

इस पत्रिका की कुछ अलग ही विशेषतायें हैं, जिन के कारण यह पत्रिका हिन्दी मासिक पत्रिकाओं में अपना विशेष स्थान रखती है। जितना उत्तम कथानक इस पत्रिका में देखने को मिलता है, उतना शायद किसी में भी नहीं।

रा. किशन माहेश्वरी, चौरई (म.प्र.)

जुलाई का अंक पढ़ा, बहुत ही पसंद आया। चंदामामा वास्तव में दिन दूनी रातचौगुनी उन्नति कर रहा है। "भयंकर घाटी "अयोध्याकांड" "संसार के आश्चर्य" प्रशंसनीय है। "चतुर बीरबल" के दोनों भाग बहुत ही अच्छे लगे।

विजयकुमार जोशी, धामनोद

"मैं चन्दामामा विगत छः वर्षों से पढ़ता आ रहा हूँ। मेरे विचार से चन्दामामा ही एक ऐसी पत्रिका है जो हमारी सारी माँगों की पूर्ति करती है। चरित्र के विकास और उन्नति के लिए बहुत सुन्दर पत्रिका है।

सतीशचन्द्र भाटिया, देहली

मेरा यह सुझाव है कि यदि चन्दामामा में विज्ञान सम्बन्धी लेख स्तम्भ शुरु किया जाये और बच्चों को विज्ञान के चमत्कारों से परिचित किया जाये तो इससे पत्रिका की सुन्दरता में वृद्धि होगी।

भारतभूषण वशिष्ट, अमृतसर

मुझे चन्दामामा की निम्नलिखित कहानियाँ बहुत पसन्द है।

भारत का इतिहास, भयंकर घाटी, चतुर बीरबल, अयोध्याकांड आदि बहुत पसन्द हैं। चन्दामामा बच्चों का एक अनमोल मोती है। मैं चन्दामामा की जितनी तारीफ़ करूँ वही थोड़ी है।

नरेन्द्रमोहन सोबती कसौली

'हमारे भारत का इतिहास' हमारे अतीत के पृष्ठों को साकार कर देता है।

'दुष्ट का आतिथ्य' दुष्ट व्यक्तियों के लिए उत्तम शिक्षा है। धारावाहिक अद्वितीय है। और यदि मैं कहूँ कि इसमें जो कुछ भी सामग्री दी गई है वह उत्तम है। तो गलत न होगा।

वीनाकुमारी अरोडा, नयी दिल्ली-१४

'भारत का इतिहास' 'पार्वती परिणय' और 'बेताल कथायें' बहुत रोचक तथा शिक्षाप्रद होती हैं। इसके अतिरिक्त दूसरी रचनायें भी विशेषतः सुन्दर हैं।

‘सात बेटों के बराबर है
मेरा सपूत...’

‘कपड़ों की धुलाई को लीजिए तो हमारा मुन्ना सात बेटों के बराबर है — इतने कपड़े मैले करता है वह! लेकिन सनलाइट के कारण मुझे कपड़े धोना बिल्कुल आसान हो गया है।

‘सनलाइट जैसे शुद्ध और भरपूर झागवाले साबुन ही से कपड़ों की इतनी अच्छी धुलाई इतने आराम से हो सकती है! फिर इसमें आश्चर्य ही क्या अगर मैं अपनी सारी धुलाई सनलाइट से करती हूं।’

नई दिल्ली की श्रीमती कमला वाधवानी कहती हैं: घरभर की धुलाई के लिए सनलाइट के समान दूसरा साबुन नहीं।

आपके कपड़ों की सर्वोत्तम सुरक्षा के लिए

हिन्दुस्तान लीवर ने बनाया

S. 31-X29 HI

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

हमने कुछ मास पूर्व "चन्दामामा" में भारत का इतिहास क्रमशः प्रकाशित करना प्रारम्भ किया था।

इसके बारे में हमारे पास पाठकों के कई पत्र आते हैं—अधिकांश प्रशंसात्मक ही।

भारत के प्राचीन इतिहास के बारे में कई पुस्तकें हैं और उनकी सामग्री में समानता नहीं है। मत भेद हैं। पर हम ऐसा इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिसके बारे में कम से कम मतभेद हैं।

वर्ष: १३   अगस्त १९६२   अंक: १२

भारत का इतिहास

शक, पल्लव, यवन आदियों को, जिन्होंने उन साम्राज्यों को वश में कर लिया था, जिन्हें विदेशीयों ने भारत में स्थापित किये थे पहिली चोट दक्षिण देश में सहनी पड़ी ।

सातवाहन वंश के गौतमीपुत्र शतकर्णी ने दक्षिण में उनका साम्राज्य न पनपने दिया । परन्तु इनका शासन कुछ समय तक उत्तर में निर्विघ्न चलता रहा ।

वासुदेव कुशान के बाद, कुशानों की शक्ति कम अवश्य हो गई थी । पर पूरी तरह नष्ट न हुई थी । ईसा के तीसरी सदी में इनके आधीन चार राज्य थे । परन्तु गुप्त साम्राज्य के आविर्भाव के साथ विदेशीयों की शक्ति पूर्णतया समाप्त हो गई ।

प्रथम चन्द्रगुप्त के साथ ही गुप्त राजाओं की उन्नत दशा ३२० में आरम्भ हुई । चन्द्रगुप्त की उपाधि "महाराजाधिराजा" थी ।

बिहार के शक्तिशाली लिच्छिवी राजवंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह करके उसने अपनी शक्ति की वृद्धि की । उसके समय में गुप्त साम्राज्य में अलहाबाद, अयोध्या और दक्षिण बिहार सम्मिलित किये गये थे ।

गुप्त राजाओं में प्रमुख समुद्रगुप्त था । यह ३२० के बाद कभी गद्दी पर आया और ३८० से पहिले ही मर गया । इसकी प्रतिमा बहुरुपी था । यह कवि, पंडित और गायक भी था । इसके दरबार में कितने ही कवि और पंडित थे । उनमें हरिशेन बड़ा कवि और बड़ा योद्धा भी था ।

यद्यपि इसके विजय चिन्ह कंची तक देखे जाते हैं । पर इसका साम्राज्य नर्मदा

और महानदी तक ही सीमित रहा। गंगा, यमुना दोआब, पूर्वी माल्वा और शायद बंगाल के कुछ ज़िले गुप्त साम्राज्य में ही थे।

इसका प्रभाव साम्राज्य की सीमाओं से दूर तक व्याप्त था। पूर्वी बंगाल, असाम, नेपाल, गढ़वाल, जलन्धर, पंजाब के राजा, पश्चिम भारत के मालव, यौधेय, मद्रक, अभिर, सनाकानीक, कुशान के वंशज, लंका के राजा और कितने ही उसके प्रभाव में थे और उसको कर वगैरह देते थे।

इस तरह दिग्विजय करने के बाद उसने अश्वमेध यज्ञ भी किया।

समुद्रगुप्त के बाद दूसरा चन्द्रगुप्त राजा बना। इसकी उपाधि विक्रमादित्य थी। इसका शासन ३८० से ४१३ तक रहा। इसने भी अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

साम्राज्य विस्तार के लिए उसने युद्ध ही नहीं किये, परन्तु और भी उपाय बरते। दूसरे राजवंशों की राजकुमारियों से विवाह करके उसने अपनी शक्ति में वृद्धि की। कुबेर नामक राजा की लड़की से विवाह करके, नाग वंशीयों से और रुद्रसेन से अपनी लड़की का विवाह करके दाक्षिणात्यों से मैत्री स्थापित की।

यह वचन देकर कि पश्चिम मालवा, काठियावाड़ में शकों का शासन समाप्त कर दूँगा, सनाकानी के नायकों को अपना सामन्त बना लिया। इसने शकों को पराजित किया था, यह इसके सिक्के निरूपित करते हैं—बाण के "हर्ष चरित" से भी हमें यह पता लगता है।

इस चन्द्रगुप्त के सिक्कों पर 'विक्रमादित्य' 'सायसांक' और 'शकारि' आदि अंकित

हैं। विक्रमादित्य के बारे में कितनी ही कल्पित कहानियाँ हैं। एक कहानी है कि इसके दरबार में नवरत्न थे। औरों के बारे में तो कहना मुश्किल है, पर इसके लिए आधार है कि कालिदास, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का समकालीन था।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के बाद पहिले कुमार गुप्त ने, उसके बाद स्कन्द गुप्त ने राज्य किया। कुमार गुप्त का नाम महेन्द्रादित्य भी था। इसने ४१५-४५५ में राज्य किया। इसके समय में, गुप्त साम्राज्य हिमालय से काठियावाड़ तक था। इसके अन्तिम दिनों में, नर्मदा की घाटियों में पुष्यमित्र शक्तिशाली हो गये और इसे तंग करने लगे। परंतु स्कन्द गुप्त ने इनका दमन किया। परंतु वह हुणों द्वारा सताया गया। स्कन्द गुप्त ने उनके प्रथम आक्रमणों का मुकाबला किया और उनको जीता। इस विजय का वर्णन "कथा सरित्सागर" में है। स्कन्द गुप्त का शासन ४६७ में समाप्त हुआ।

इतिहास में कितने ही गुप्त वंश के राजा हुए। इन में से कुछ हुणों को जीत कर प्रसिद्ध भी हुए। इन में बालादित्य और यशोधर्म मुख्य हैं। ५, ६, ७, सदी में भी देश के दो भागों में गुप्त राजा राज्य कर रहे थे। ७ वीं सदी में आदित्यसेन ने गुप्त वंश को पुनरुद्धारित किया और उसने बड़ी बड़ी उपाधियाँ भी अपने नाम के पीछे लगाईं। परन्तु ८ वीं सदी में कन्नौज और गौड़ देश के राजाओं के संघर्ष में मगध नष्ट-सा हो गया और उसके साथ गुप्त साम्राज्य का भी ह्रास हुआ।

पार्वती परिणय

सप्तम अध्याय

तप कर समाप्त, गृह
आई है शैल-सुता,
सखियों से समाचार, पाकर
पिता अति प्रसन्न हुए।

स्नान अभ्यंगन करा
सखियों को तोष मिला।
स्वर्ण पुतलिका-सी
दीपित थी शैल-सुता।

रजत-गिरि पहुँचे शिव,
ध्यान सप्त ऋषियों का
मन में तत्काल किया
देखा, ऋषि सब उपस्थित थे।

आज हम बड़भागी हैं,
सप्तऋषि, नीलकंठ!
हे शिव! तुम से पुण्यवान ने
मन में हमें वास दिया।

पहले ही अपार यश
हमको मिला है, देव!
अनुग्रह से आप के वह
आशातीत होगा अब!

कैसे हमें स्मरण किया,
क्या आज्ञा है, देव?
विनय की अरुंधती ने
युगल कर जोड़कर—

मुनियो! आप परिचित हों
मेरी मन-स्थिति से सब!
शैलजा से मेरी अब
परिणय-अभिलाषा है!

निरवलंब अमरों की
पूरी अभिलाष करूँ?
तारक जयी सामंत का
मैं शीघ्र ही सृजन करूँ?

निकट गिरिराज के जा
मेरी अभिलाषा कह दो!
ऐसा शिवादेश पा
मुनि-समाज हर्षित था।

नभ-पथ से मुनि-वृन्द
तत्क्षण प्रस्थान किया।
हिमगिरि की ओषधप्रस्थ
नगरी में सब पहुँच गये।

भक्ति-भाव से हिमालय ने
ऋषि सप्त की पूजा की।
सादर मुनि-समाज साथ ले
अंतःपुर को प्रस्थान किया।

'आइये मुनीश-वृन्द!
कहिए क्या आज्ञा है?

यह कह, चरण शैलेश पड़ा
कहा तत्काल वशिष्ठ ने यों—

अद्रिराज! आज्ञा महेश की से
हेम-सुता माँगने आये हैं!
पुण्यात्मा आप जैसे और
भू-तल पर होगा ही कौन!

सुन यह वशिष्ठ से
गिरिपति ने कहा—'धन्य!'
पुलकित गात्र हो तब
देखा उमा की ओर!

व्रीड़ा से गिरि-तनया,
गिनती हस्त कमल-दल,
कनखी से माँ को देख
स्मित, नत वदन हुई—

मुदित मन मेनका ने
पूछा शुभ-वेला कब!
चौथे दिन आज से
ऋषि-सप्त ने कहा तब!

अद्रिराज की आज्ञा पा,
उमा ने प्रणाम किया,
ऋषियों ने आशिष दी,
आलिंगन किया अरुंधती ने।

विदा ले गिरिपति से
संभ्रम से चले गये।
शुभ संदेश शिव को दे,
परिणय का प्रबन्ध किया।

देवेन्द्रादि, रंभा-ऊर्वशी,
सज-धज भव्य यान
कौतूहल करते कैलाश पर
आये हजारों की संख्या में!

मला, मलयज मुनीशों ने,
रवि-सुता-गंगा ने चँवर दुला,
वरदा ने अलंकृत किया,
दर्पण दिखाया शची ने।

दुल्हा महेश्वर बने,
भृंगीश्वर वाहन चढ़े!
घंटिका निनादित कंठ,
नंदीश्वर निकल पड़ा।

हिमगिरि गोपुरों पर
मंगल तुरही बज उठी,
विवाह-मण्डप में उठा गूँज
मधुर शहनाई स्वर।

हल्दी, कुंकुम थाल लिये,
कामिनियाँ प्रवेश हुई।
मेनका भी थी साथ में
शिवजी के स्वागत में।

स्वर्ण घट से मेनका ने
अर्घ्य दिया, गिरिपति ने
पाद-प्रक्षालन कर
सभक्ति मधु-पर्क किया।

लग्न समय वेदोचित, गुरुवर वशिष्ठ ने
मंत्रों से अग्नि प्रज्वलित की तब !
मंगल गीत गाती सखियाँ
ले आयीं वेदी पर, गिरिजा को !

सप्त ऋषियों ने पढ़ मंत्र
सविधि कराया होम।
शिवजी ने उमा के गले
डाल दिया तब मंगल-सूत्र।

युग-पक्ष सुमंगलियों ने,
शिवा-शिव को प्रेरित किये,
स्मित युगल अंजलि में ले चावल,
शीश डालते रहे समोद।

ब्रह्मा को प्रणाम किया
दंपति ने सभक्ति नम्र !
देख सम्मुख अरुंधती को
युगल ने कर जोड़ दिये।

एक रमणी पट घूंघट में,
पास आ अरुंधती के,
रमणी के साथ एक
आया सुन्दर युवक वहाँ।

वे मन्मथ-रति थे कर पुष्प लिये,
फेंक रहे शीश पर समुद वधू-वर के।
रंभा औ उर्वशी बाँध पग पायल,
झनक झनक रहीं नाचती।

आमंत्रित दम्पति वर्ग
हंस करते विनोद रहे—
धिमि तक धिमि तक कर
प्रमदों ने नृत्य किया—

वसंत कर पुष्प लिये,
जोड़ करद्वय खड़ा द्वार
वर-वधु लतिका हिंडोले पर
शोभित ज्यों रति-मन्मथ से।

★ [समाप्त]

[१३]

[केशव और जयमल्ल और बूढ़ा जिस दिन गुफ़ा छोड़कर निकले थे, उसी दिन खड्गदण्डी मान्त्रिक भी दो अंगरक्षकों के साथ विन्ध्याचल की ओर निकल पड़ा। केशव आदि अन्धेरा होते होते एक गाँव में पहुँचे। उन्हें मालूम हुआ कि खड्गदण्डी भी उसी गाँव में आ रहा था। वे आगे चले। बाद में—]

केशव के बूढ़े पिता ने रास्ता दिखाया। वे सब जल्दी ही गाँव पार करके जंगल में घुसे। तब तक काफ़ी अन्धकार हो चुका था। जंगल पक्षियों के कलरव, जन्तुओं के कोलाहल, चीत्कार आदि से गूँज रहा था।

तीनों हताश-से हो एक पेड़ के नीचे जा बैठे। "क्या इस वेश में हमें खड्गदण्डी पहिचान सकेगा?" केशव ने जयमल्ल से पूछा।

जयमल्ल ने सिर हिलाते हुए कहा—"कह नहीं सकते। पर हमने एक गल्ती की है, गुरु मौनानन्द ने चबूतरे के पास इस तरह बातचीत की कि सब सुन सकें। यदि वह ऐसा न करता, तो शायद बहुत अच्छा होता।"

"इसमें गल्ती क्या है ! इस देश पर्यटन में मैंने पहिले ही कहा था कि शिष्यों से ही बातचीत करूँगा।" बूढ़े ने साफ़ साफ़ कहा।

"हाँ, परन्तु किसी ने तुम्हारे बातचीत करने का तरीका पहिचान लिया तो ! हमें ब्रह्मपुर राज्य की सीमाओं से बाहर निकलने तक बड़ा सावधान रहना होगा, हमें हर काम बड़ी सावधानी से करना होगा। यह भी न जाने कैसे हुआ कि हम और ब्रह्मदण्डी एक साथ ही निकले। राजगुरु की चाल तो समझ ही गये होगे ! सुना है यह उसके पैर का फोड़ा ठीक करने के लिए विन्ध्याचल से जड़ी बूटी लाने निकला है। हमारे शत्रु हम से भी अधिक चालाक मालूम होते हैं।" जयमल्ल ने कहा।

बूढ़े ने "हाँ" कहते हुए सिर हिलाया, फिर झट उठकर पूछा—"कहीं यहीं आस पास घोड़े के हिनहिनाने की आवाज सुनाई दी !"

अभी केशव और जयमल्ल जवाब भी न दे पाये थे कि घोड़े का हिनहिनाना और शोर सुनाई दिया। तीनों आश्चर्य से एक दूसरे का मुख देखने लगे।

"ब्रह्मदण्डी और उसके अनुचर इसी तरफ़ आते मालूम होते हैं। यदि हमें अपने कष्ट दूर कर इस राज्य से बाहर निकलना है, तो हमें उनके घोड़ों को लेकर भाग जाना चाहिये।" बूढ़े ने सोचते हुए कहा।

"क्या ! क्या यह सब उतना आसान है बाबा !" केशव ने पूछा।

"यह देखो, मुझे उस तरह बुलाना छोड़ दो, नहीं याद है ! मैं तुम्हारा गुरु हूँ। तुम कनिष्ट हो और जयमल्ल ज्येष्ठ है, हम जब एकान्त में हों, तब भी हमें इसी

तरह पुकारना चाहिये। खैर, यदि तुम हाँ कहो, तो मैं ब्रह्मदण्डी का घोड़ा एक क्षण में ला सकता हूँ। यदि तुम उसके अनुचरों के घोड़े ले सके, तो हम सवेरे होते होते ब्रह्मपुर की सीमायें पार कर सकते हैं। तब कोई डर न रहेगा।" बूढ़े ने कहा।

उसकी बातें सुनकर जयमल्ल ने हँसकर कहा—"तुम्हारी क्या चाल है! मान्त्रिक का घोड़ा कैसे ले सकोगे! क्या तुम उसका तलवार से मुकाबला करोगे!"

"आमने सामने खड़े हो इस अन्धेरे में उनका मुकाबला करना अक़्लमन्दी नहीं है। हमारा शोर सुन यदि गाँववाले भागे भागे आये, तो हम पकड़े जायेंगे। बिना शोर शराबे के घोड़ों पर से उनको हटाना होगा, मैं पेड़ पर से ब्रह्मदण्डी पर रस्सी का फन्दा डालूँगा, नीचे गिरा दूँगा, फिर उसका घोड़ा ले लूँगा।" बूढ़े ने कहा।

"यदि तुम इस उम्र में इतना साहस कर सकते हो, तो क्या हम ही पीछे रहेंगे! क्यों केशव!" कहता कहता जयमल्ल उठा।

"केशव नहीं कनिष्ठ, याद रखो।" बूढ़ा ज़रा गरमाया। तीनों वहाँ से

निकल कर उस तरफ़ चले, जिस तरफ़ से घोड़े आ रहे थे।

इस बीच ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक अपने दोनों अंगरक्षकों के साथ गाँव की ओर आ रहा था। उसके आगे पीछे अंगरक्षक घोड़ों पर सवार थे।

ब्रह्मदण्डी को घोड़े की सवारी की आदत न थी। क्योंकि पैदल जाना सम्भव न था, इसलिए घोड़े पर सवारी करने के लिए वह मान गया था। अन्धेरा था, घना जंगल था। क्रूर जन्तुओं का चीखना, चिल्लाना, उसमें डर पैदा कर रहा

था। वह वातावरण उसके लिए बड़ा भयंकर था।

"कल से हमें रात में चलना छोड़ देना होगा। सूर्योदय के साथ निकल पड़ेंगे और सूर्यास्त के साथ रुक जायेंगे। जानते हो ऐसा क्यों करेंगे? जयमल्ल, केशव और उसका पिता बड़े दुष्ट हैं। वे अन्धेरे में हम पर हमला कर सकते हैं। तुम जानते ही हो, उन्होंने उन पहरेदारों का क्या किया था, जो मेरी गुफ़ा का पहरा दे रहे थे।" ब्रह्मदण्डी ने कहा।

जितवर्मा और शक्तिवर्मा तो उस जंगल में, उस अन्धकार में पहिले ही डर रहे थे, ये बातें सुनकर वे और डरे। उन्होंने घोड़ों को ऐंड़ मारते हुए कहा—"ब्रह्मदण्डी, तुम्हारा कहना बिल्कुल ठीक है, वैसा ही करेंगे। कौन-सा गाँव हमें पहुँचना है? अब तक क्यों नहीं आया है वह?" उन्होंने अन्धेरे में इधर उधर देखते हुए कहा।

ब्रह्मदण्डी उनको कोई जवाब देने ही वाला था, कि इतने में वह जोर से चीखा—"मरा। धोखा। मेरी पीठ पर कोई फन्दा पड़ा है। बचाओ।"

"गलत! जो फन्दा सिर पर पड़ना चाहिये था, वह पीठ पर जा गिरा।" उसे किसी का कहना पेड़ पर से सुनाई दिया।

उसी समय जितवर्मा और शक्तिवर्मा "अजीब जानवर, जानवर" चिल्लाते चिल्लाते घोड़ों पर से गिर पड़े।

यह सब चुटकी भर में हो गया। ब्रह्मदण्डी पेड़ की टहनी से लटक रहा था। ऊपर से उसके घोड़े पर बूढ़ा कूदा, केशव और जयमल्ल एक छलाँग में

जितवर्मा और शक्तिवर्मा के घोड़ों पर जा बैठे।

"ज्येष्ठ, कनिष्ठ, आओ," कहते हुए उस बूढ़े ने अपना घोड़ा जंगल में दौड़ाया।

तब तक ब्रामदण्डी का कुछ कुछ धीरज बन्ध गया था, उसने पीठ में बन्धी रस्सी को इधर उधर खींचते हुए कहा—"जित, शक्ति, कहाँ हो! तुमने विचित्र जन्तुओं को देखा था! तो हो न हो वे केशव, जयमल्ल और बूढ़े ही हैं। केवल जयमल्ल ही वह विद्या जानता है। उनका पीछा करो, पकड़ो, उन्हें मारो काटो।" वह चिल्लाया।

जितवर्मा और शक्तिवर्मा का, ये बातें सुनकर कुछ ढाढ़सा बँध। वे खड़े हुए, म्यानों में से तलवार निकाल रहे थे कि ब्रामदण्डी ने रोनी-सी आवाज में कहा—"जित, शक्ति, ज़रा ठहरो तो, पहिले इधर आओ, मुझे इस टहनी से नीचे उतारो।"

जितवर्मा और शक्तिवर्मा उसके पास गये, ब्रामदण्डी की कमर में बँधी रस्सी को तलवार से काटा। वह नीचे गिरने ही वाला था कि उसको बीच में पकड़कर खड़ा कर दिया।

गाँव के बाहर जो थोड़ा बहुत शोर हुआ था, वह गाँववालों ने भी सुना। वे मशाल और लाठियाँ लेकर वहाँ आये। जब उन्होंने ब्रामदण्डी और उसके अंगरक्षकों को उस हालत में देखा, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही।

"अरे, क्या यों देख रहे हो, क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई है!" ब्रामदण्डी उन पर गरजा। "हम राजा के भेजे हुए राज-कर्मचारी हैं। तीन राजद्रोही हमारे घोड़े लेकर उस तरफ़ भाग गये हैं। उन्हें पकड़ लो, पकड़नेवाले को

इतने में उनको पीछे से मशालें और लाठियाँ लेकर आते हुए ग्राम युवक दिखाई दिये।

"हम अच्छी आफ़त में फँसे।" जयमल्ल ने पीछे की ओर से आते हुए युवकों को देखकर कहा।

"आफ़त में फँसना क्या हमारे लिए कोई नई बात है! यह न पहिली बार है न अन्तिम बार ही।" बूढ़े ने खीझकर कहा—"उधर देखो, दीये की रोशनी-सी दिखाई देती है। क्या तुम देख सकते हो! अच्छी तरह देखो! शायद वह जंगल में रहनेवाले किसी गड़रिये की झोंपड़ी होगी। चलो हम सीधे उस ओर चलें, देखें वहाँ छुपने छुपाने की कोई गुँजाईश है कि नहीं! अगर घोड़े छोड़ने ही पड़ें तो छोड़ देंगे।"

जल्दी ही वे तीनों उस रोशनी की ओर घोड़े दौड़ाने लगे। वे पास पहुँच ही रहे थे कि पेड़ के पीछे से दो आवाजें आईं—"कौन आ रहा है! ठहरो।"

यह सुनते ही बूढ़े ने घोड़े पर से उतर कर कहा—"आप कौन हैं, हम नहीं जानते, हम यात्री हैं। हमें लूटने के लिए डाकू हमारा पीछा कर रहे हैं, इसलिए हम

आधा राज्य मिलेगा।" उसने दान्त कटकटाये।

ग्रामवासियों में से कुछ साहसी युवक उस तरफ़ भागे, जिस तरफ़ ब्रह्मदण्डी ने अंगुली दिखाई थी। वे ही ब्रह्मदण्डी और उसके अनुचरों को बहुत आदर सम्मान के साथ गाँव में ले गये।

जयमल्ल, केशव और उसका बूढ़ा पिता घोड़ों पर सवार हो चले आ रहे थे। पर चूँकि अन्धेरा था, रास्ते में टहनियाँ थीं, काँटे वगैरह थे, इसलिए वे जितनी तेज जाना चाहते थे, उतनी तेज न जा सके।

यहाँ भागे भागे आये हैं। उनकी मशालें लाठियाँ वगैरह, आपने देखी ही होंगी।"

बूढ़े ने अभी बात खतम न की थी कि दीया बुझ गया। एक हट्टा कट्टा लम्बा चौड़ा जंगली भाला पकड़े पकड़े वहाँ भागा भागा आया। उसने केशव और जयमल्ल को देखकर पूछा—"क्या तुम नीचेवाले गाँव की ओर से आ रहे हो? उस गाँव में आधों का काम दूसरों को लूटना है और बाकी का विनोद के लिए दूसरों का सिर काटना पेशा है। तुम न डरो, तुम्हें बचाना मेरी जिम्मेवारी है।" फिर उसने एक तरफ़ मुड़कर कहा—"हे, उन मशालवालों पर बाण छोड़ो, वे एक कदम भी न आगे बढ़ पायें।"

वह प्रान्त, जो तब तक प्रशान्त था, शोर शराबे से गूँजने लगा। जंगली युवक ग्राम युवकों पर पेड़ों पर से निशाना लगा लगाकर बाण छोड़ने लगे। देखते देखते वह प्रदेश युद्धभूमि बन गया। ग्राम युवक इस आशा में कि आधा राज्य मिलेगा और जंगली युवक अपने नेता की आज्ञा पालन करने के उत्साह में जोर शोर से लड़ने लगे। उन ग्राम युवकों का, जो बाणों से बचकर आ गये थे, जंगली युवक लाठियों से मुकाबला करने लगे।

एक क्षण जंगलियों के नेता ने वह दृश्य देखकर सिर हिलाते हुए कहा—"ये दुष्ट हमारे लोगों का हमला न रोक सकेंगे, यह मैं जानता हूँ। फिर भी इस रात के समय यह जगह ठीक नहीं है। क्योंकि तुम्हें बचाना मेरी जिम्मेवारी है, इसलिए मैं तुम्हें एक गुप्त प्रदेश में भेज दूँगा, आओ।" कहकर वह चला। जयमल्ल, केशव और बूढ़ा उसके पीछे पीछे घोड़ों की लगाम पकड़े पकड़े चलने लगे। (अभी है)

उपकारी

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा।

तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम राजा हो, पर तुमको किसी और के लिए नौकर की तरह काम करता देख अचरज होता है। क्योंकि राजा प्रायः उन नौकरों के साथ भी अन्याय करते हैं, जो उनका उपकार करते हैं। इसके दृष्टान्त के रूप में सुप्रभाकर नाम के राजा की कहानी सुनाता हूँ, सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की :—

किसी ज़माने में, दक्षिण में वीर्यार्थपुर नगर पर सुप्रभाकर राज्य किया करता था। उसे अपने आधीन कर्मचारियों पर आदर

बेताल कथाएँ

और अभिमान था। परन्तु उनमें से धीरज नामक व्यक्ति को वह सब से अधिक चाहता था।

यह धीरज, राजा के शयनकक्ष का रक्षक था। रात को जब राजा सो रहा होता, तो उसके जीवन की जिम्मेवारी उस पर थी। इसीलिए राजा ने इस काम के लिए बहुत ही विश्वासपात्र नौकर रखा। दूसरों की बताई हुई गोपनीय बातें राजा धीरज से भी कहा करता।

एक दिन रात को राजा ने अपने शयनकक्ष की ओर जाते हुए धीरज से कहा—"कल शिकार पर जाना होगा। मेरे उठते ही शिकार के लिए सब तैयारियाँ की जायें, यह सम्बन्धित सब कर्मचारियों को कह दो।"

धीरज यह काम तुरत करवाकर रात भर अपने काम पर रहा। सवेरा होते ही राजा ने उठकर शयनकक्ष से बाहर आते हुए पूछा—"क्यों, सब तैयारियाँ हो गई हैं? शिकार पर जानेवाले क्या सब तैयार हैं?"

धीरज ने लम्बा-सा मुँह करके कहा—"महाराज, आप आज शिकार पर न जाइए। सवेरे मुझे एक ख़राब सपना आया था। प्रायः ऐसे सपने सच निकला करते हैं। सपना यों था, शिकार के रास्ते में घोड़े बिदक गये, अन्धाधुन्ध भागने लगे, रथ के पहिये टूट गये, वह गढ़े में गिर गया। घोड़े, रथ का चालक, रथ में सवार आदमी भी मर गया। सपना सच हो या झूट, आज आपका शिकार पर जाना ठीक नहीं है।"

यह देखने के लिए, यह सपना ठीक निकलता है कि नहीं, राजा ने स्वयं शिकार पर जाना छोड़ दिया, पर उसने

अपना रथ शिकार के आदमियों के साथ भेज दिया। रथ में एक और योद्धा सवार हुआ।

धीरज का सपना बिल्कुल ठीक निकला। रास्ते में घोड़े बिदक गये और रथ को ज़ोर से खींच ले गये। चालक उन्हें रोक न सका। रथ एक टीले पर जा रहा था कि उसके पहिये निकल गये। वह टीले पर से गिरकर टुकड़े टुकड़े हो गया। घोड़े, चालक, रथ में सवार योद्धा मारा गया।

शाम को यह समाचार मालूम होते ही राजा ने धीरज को बुलवाया। प्राण रक्षा के लिए उसकी प्रशंसा की और उसे बहुत-से ईनाम दिये।

कुछ समय बीता। दीपावली अगले दिन थी कि सवेरे धीरज को एक और सपना आया। उसने देखा कि किले का बुर्ज़ टूटकर गिर गया था।

यह सपना भी राजा से सम्बन्धित था, क्योंकि दीपावली की रात को बुर्ज़ पर चढ़कर नगर की शोभा देखा करता था।

धीरज ने राजा से कहा—"महाराज, आज आप नगर की शोभा देखने के लिए बुर्ज़ पर न जाइये। मुझे सवेरे सपना

आया था कि वह बुर्ज़ टूटकर गिर गया है।"

राजा को आश्चर्य हुआ। क्योंकि धीरज का पहिला सपना सच निकला था, इसलिए उसने इस बार भी उसकी सलाह मानने का निश्चय किया।

उस दिन रात को वह बुर्ज़ पर न चढ़कर शहर देखने निकला। वह अभी निकला था कि बुर्ज़ यकायक टूटकर गिर गया।

वे नगरवासी जो जानते थे कि उस समय राजा बुर्ज़ पर होगा, यह भी
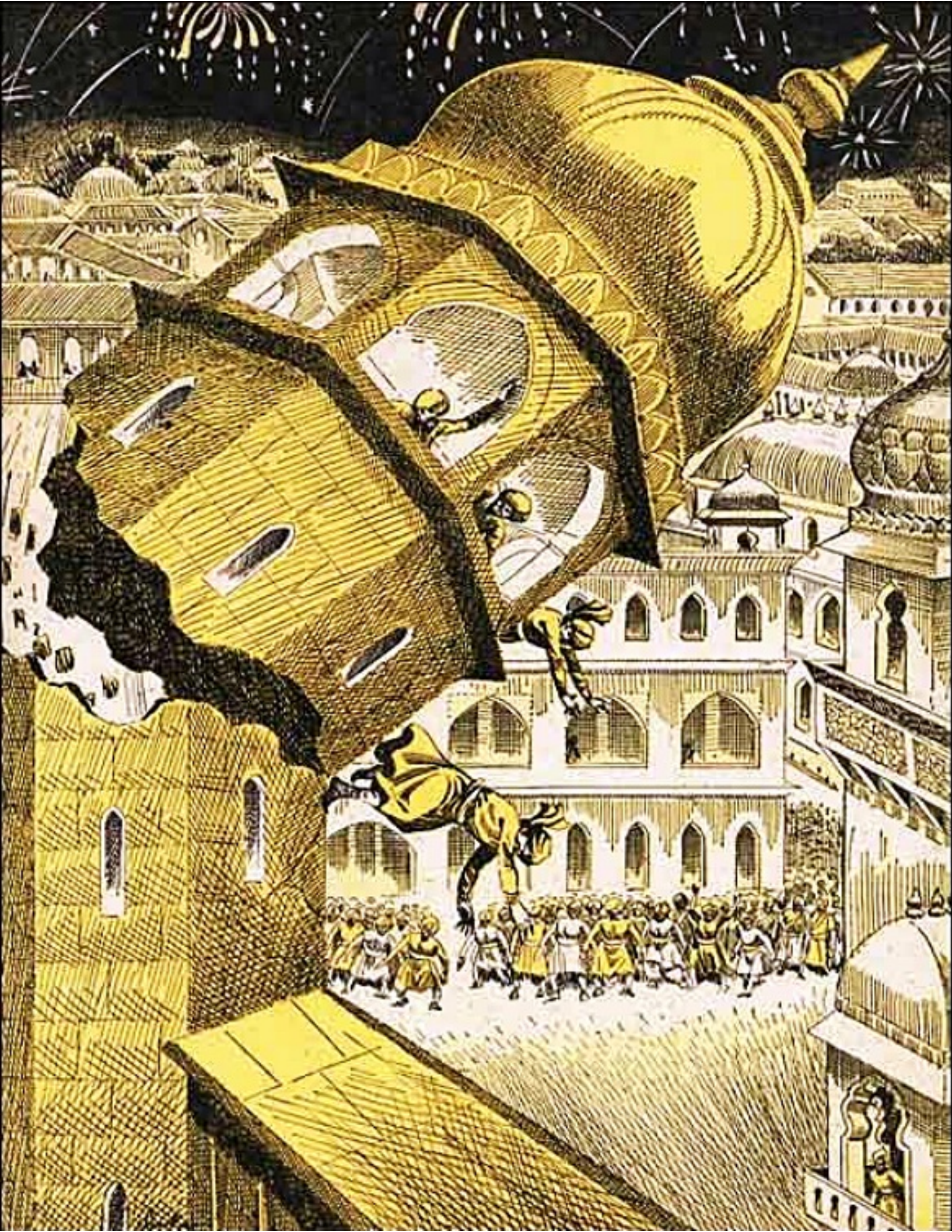
अनुमान करने लगे थे कि उस पर कोई आपत्ति आई होगी।

एक बार उसने और प्राण रक्षा की थी, इसलिए राजा ने धीरज को और भी बड़ा ईनाम दिया।

कुछ समय और बीता। धीरज को एक और ख़राब सपना आया। दो आदमी राजा के उद्यान में टहल रहे थे। उनमें से एक राजा का अंगरक्षक था। ये दोनों रजनी के पौधे के पास गये और उसके फूलों की सुगन्ध ले रहे थे कि एक साँप बाहर निकला और फुंकारते हुए दूसरे आदमी को उसने काटा। वह आदमी छटपटाकर वहीं ठंडा हो गया।

सपने के बाद धीरज ने अनुमान किया कि वह दूसरा आदमी राजा ही था। जब शाम को उसे मालूम हुआ कि राजा अपने अंगरक्षक के साथ उद्यान में टहलने जा रहे थे धीरज को सवेरा का सपना याद आया। उसने राजा से कहा—"आज आप उद्यान में न जाइए।"

क्योंकि दो बार उसका सपना सच निकला था इसलिए राजा ने स्वयं जाना छोड़ दिया। अंगरक्षक से कहा—"यदि

तुम चाहो तो बाग में टहल आओ।" अंगरक्षक उद्यान में गया। रास्ते में उसे एक परिचित व्यक्ति मिला और वह उसको भी साथ ले गया।

जैसा धीरज ने सपने में देखा था, वे दोनों रजनी के पौधे के पास रुके और वे उसकी सुगन्ध का आनन्द ले रहे थे कि साँप फुँकारता बाहर निकला, अंगरक्षक के पासवाले आदमी को उसने डसा और पौधे में कहीं चला गया। वह आदमी छटपटाया और मर गया। यह सब देखते देखते हो गया।

धीरज का सपना तीसरी बार भी सच ही न निकला, बल्कि उससे राजा की जान भी बची। परन्तु राजा ने इस बार उसको ईनाम तो दिया ही नहीं, बल्कि उसे शयनकक्ष के अंगरक्षक के पद से भी हटा दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, सुप्रभाकर महाराजा ने धीरज को दो बार तो ईनाम दिया। तीसरी बार जब उसने उसकी प्राण रक्षा की तो उसे नौकरी से क्यों हटा दिया? क्या राजा में कृतज्ञता की भावना लुप्त हो गई थी? या राजा को प्राणों से विरक्ति हो गई थी? अगर तुमने इन प्रश्नों का उत्तर जान-बूझकर न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

तब विक्रम ने यों कहा—"धीरज को नौकरी पर से हटाकर राजा ने ठीक ही किया। रात भर उसे जाग कर पहरा देना चाहिए था, उसके लिए सपना देखना बड़ा अपराध था। यह सोच कि धीरज ने दो बार उसकी जान बचाई थी, उसने कृतज्ञतावश उसको दो बार माफ़ कर दिया था, तीसरी बार भी उसने उसको नौकरी पर से हटा दिया, मगर और कोई सज़ा न दी। अगर उसकी यही आदत हो जाती तो रोज़ सोकर राजा पर वह और कोई आपत्ति लाता। इसलिए ही राजा ने निश्चय किया कि वह शयन कक्ष के अंगरक्षक के काम के लिए ठीक न था। जो कुछ उसने किया ठीक ही था।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

भूख किार

एक समय में ग्रीस देश में समुद्र के तट पर एक वृद्ध और उसकी पत्नी रहा करते थे। बूढ़ा मधु-मक्खियाँ पाला करता और कुछ खेती भी करता।

उनको बस एक ही चिन्ता था, वह यह कि उनकी सन्तान न थी। उन्हें गरीबी की भी परवाह न थी। इसलिए ही गरीब होते हुए भी, यदि कोई अतिथि आता, तो उसका खूब सत्कार करते।

एक दिन रात को समुद्र में तूफ़ान आया। समुद्र ज़ोर-ज़ोर से गरज रहा था, उस समय उनकी झोंपड़ी के सामने एक राहगीर आया। बूढ़े बूढ़िया ने उस राहगीर की अगवानी की और उसको झोंपड़े के अन्दर ले गये।

उन्होंने अतिथि के लिए एक बछड़ा मारा और उनके पास जो कुछ शराब रह गई थी, उसे दी। उनके पास एक ही बिछौना था, उसके सोने के लिए उसे दे दिया। जब अगले दिन अतिथि अपने रास्ते पर गया, तो बूढ़ा उसे थोड़ी दूर तक पहुँचाने गया। जब दोनों समुद्र के किनारे खड़े थे, तो अतिथि ने बूढ़े से कहा—"बाबा, कोई तुम्हारी ऐसी इच्छा है, जिसे तुम पूरा करना चाहते हो?"

"मुझे बस यही फ़िक्र है कि मेरा कोई लड़का नहीं है। अब बूढ़ा हो गया हूँ। सन्तान होने की सम्भावना भी नहीं है।" वृद्ध ने कहा।

यदि तुम अपनी इच्छा पूरी करना चाहते हो, तो जो मैं कहूँ, वह करो—कल तुमने जिस बछड़े को मेरे लिए मारा था, उसके चमड़े से मशक बनाओ, उसमें समुद्र का पानी भर दो और अपने घर के अग्निहोत्र

[एक ग्रीक पौराणिक कथा]

के पास भूमि में गाड़ दो। नौ मास के बाद जब तुम उसे काटकर देखोगे, तो उसमें एक शिशु मिलेगा।" यह कहकर अतिथि समुद्र में अदृश्य हो गया।

वृद्ध को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह झोंपड़े में वापिस आया। जो कुछ अतिथि ने कहा था, उसने वैसा ही किया। बछड़े के चमड़े से मशक बनाई और उसमें समुद्र का पानी भर दिया। अग्निहोत्र के पास उसे गाड़ दिया।

नौ मास बाद जब उस मशक को निकाला, तो उसमें किलकारियाँ भरता एक लड़का निकला। उसका नाम उन्होंने मृगशिर रखा। वह प्रति रोज अधिक बलशाली और सुन्दर होता गया। बड़ा होने पर, वह शिकार में बहुत प्रवीण भी हो गया। उसमें एक ऐसी दिव्य शक्ति थी, जो किसी मनुष्य में न थी, वह यह कि जिस तरह भूमि पर चल सकता था, उसी तरह जल पर भी चल सकता था।

मृगशिर बड़ा हुआ। उसके माँ-बाप मर गये। तब वह अपनी रोजी चलाने के लिए देश में निकल पड़ा।

वह समुद्र में से लहरों पर उछलता कूदता, अन्त में एक द्वीप में पहुँचा। इस द्वीप के राजा ने मृगशिर का खूब आतिथ्य किया, आदर किया। पर मृगशिर ने उसके आदर की परवाह न कर राजकुमारी से प्रेम किया, उसने राजा से कहा भी कि वह राजकुमारी का उससे विवाह कर दे।

सिवाय इसके कि वह पानी पर चल सकता था, मृगशिर के पास कुछ भी न था। उसके माँ-बाप उत्तम वंश के न थे और गरीब भी थे। इसलिए राजा मृगशिर को अपना दामाद नहीं बनाना चाहता

था। उसने मृगशिर की इच्छा को ठुकराने के लिए एक चाल सोची। उस समय उस द्वीप के पर्वत प्रान्त में अनेक क्रूर मृग लोगों को तरह तरह की हानि पहुँचा रहे थे। राजा ने कहा कि यदि मृगशिर ने उन मृगों का नामों निशाँ तक न रहने दिया, तो वह उसे अपना दामाद बना लेगा।

मृगशिर शिकार खेलने में तो चतुर था ही। इसलिए वह हर रोज सवेरे निकल जाता, अन्धेरा होने तक शिकार करता। रात को राजमहल आता और जो कुछ मृग उस दिन वह मारता, राजा को दिखाता।

इस तरह कुछ दिन करने के बाद, उसने राजा से कहा—"आपके द्वीप के क्रूर मृगों को मैंने मार दिया है। अब न कोई शेर है, न भालू है। भेड़िया तक नहीं है।"

राजा को सन्तोष न हुआ। वह मृगशिर को अपनी लड़की बिल्कुल न देना चाहता था। इसलिए उसने उससे कहा—"तुम शिकार में सचमुच बड़े प्रवीण हो—कहीं ऐसा न हो कि क्रूर मृग कहीं बच-बचा गये हों—कुछ दिन और देखें।"

इस प्रकार कुछ समय तो बीत गया फिर मृगशिर उस पर दबाव डालने लगा। राजा झूठ बोलने लगा। कभी कहता कि कहीं भालू दिखाई दिया है और कभी कहता कि कुछ बच्चे भेड़िया देखकर डर गये थे। राजा की दी हुई झूठी खबरों को सुनकर मृगशिर क्रूर मृगों को खोजने लगा। पर उसे कहीं वे न दिखाई दिये। वह ऊब उठा।
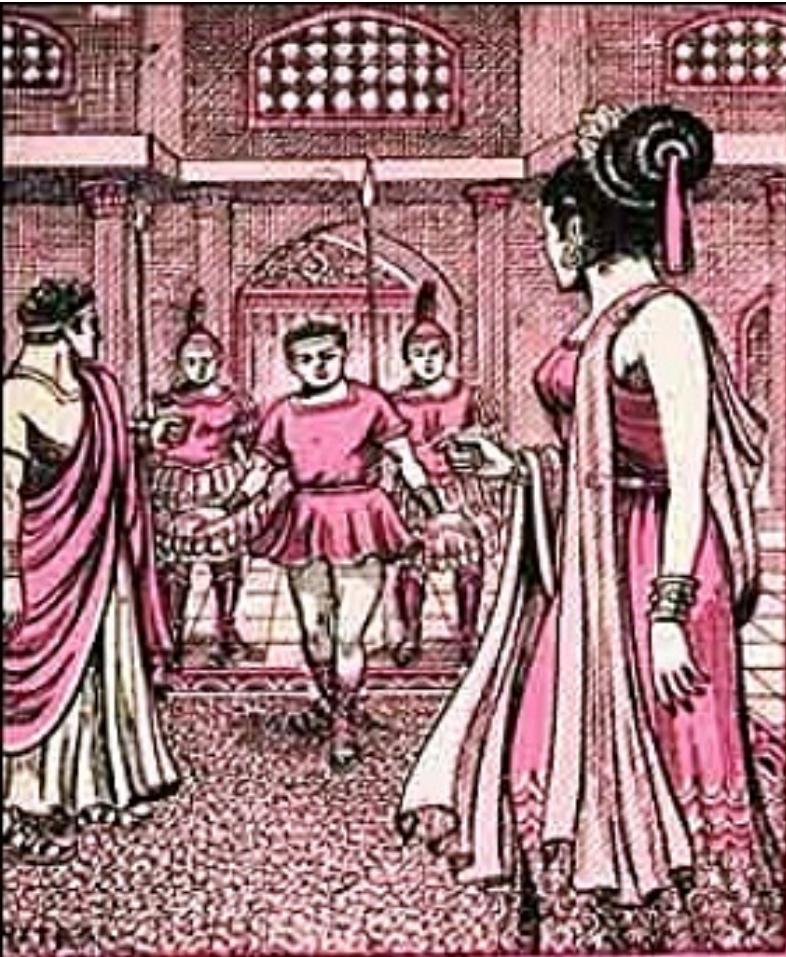
उससे पीछा छुड़ाने के लिए राजा ने एक और रास्ता सोचा। उसने कुछ आदमियों को बुलाकर कहा—"तुम मृगशिर को खूब पिलाओ। उकसाओ कि वह राजकुमारी को उठा ले जाये और जब वह यह करने लगे तो मुझे खबर दो।" वे मृगशिर के दोस्त बन गये। उससे हर रोज़ रात को खूब पिलवाते। "राजकुमारी का तुमसे विवाह राजा स्वयं कभी न करेगा। क्यों फ़िक्र करते हो? एक दिन रात के समय उसे उड़ा ले जाओ।" वे उसे सलाह देते।

सुनते सुनते मृगशिर को भी वह सलाह जंची। एक दिन वह खूब पीकर राजकुमारी के कमरे में गया। क्योंकि राजा यह पहिले ही जानता था, इसलिए राजा ने उसे अपने सैनिकों की मदद से पकड़ लिया।

"ऐरे गैरे को लाकर हमने वह आतिथ्य दिया, जो राजाओं को दिया जाता है और उसका बदला यह है? सैनिको, इस नीच की दोनों आँखें निकाल दो, इसे समुद्र के किनारे छोड़ आओ।"

इस तरह मृगशिर अन्धा हो गया और फिर उसे संसार की यात्रा करनी पड़ी। उसे न सूझा कि क्या करे। समुद्र के किनारे ही था कि रात हो गई। सब जगह

नीरवता व्याप्त हो गई। उस नीरवता में उसे समुद्र से कोई आवाज़ आती हुई सुनाई दी। वह उठा और समुद्र में उस ओर चलने लगा, जिस ओर से ध्वनि आ रही थी। समुद्र के बीच एक ज्वालामुखी था। वहाँ ऐसे लोग थे, जिनकी एक ही आँख थी। वे दिन रात काम करते।

उन लोगों ने मृगशिर का, जो उनको खोजता आया था, कुछ दिन अपने पास रखकर खूब आतिथ्य किया, फिर उनके मुखिया ने उससे कहा—"मृगशिर, तुम्हारा अन्धत्व जाने का एक तरीका है। पूर्व समुद्र से जब सूर्य निकले यदि तुम तब वहाँ गये तो उसकी रोशनी में तुम्हारी आँखें फिर आ जायेंगी।

परन्तु सूर्य जिस समुद्र में उदय होता था, वहाँ एक अन्धा मृगशिर कैसे जाये? इसलिए उसके साथ एक लड़का भेजा गया। उस लड़के को अपने कन्धे पर रख मृगशिर उसकी सहायता से समुद्र पर से चलता वहाँ गया, जहाँ सूर्य उदय होता था।

वे बहुत थकथका कर वहाँ पहुँचे। वे सूर्य के उदय की प्रतीक्षा करने लगे।

सूर्य की प्रथम किरणों के आँखों पर पड़ते ही मृगशिर को दिखाई देने लगा। वह फिर वापिस निकला। उस लड़के को उसके लोगों को सौंपकर उस राजा के प्राण लेने के लिए निकल पड़ा, जिसने उसकी आँखें निकलवाई थीं।

राजा यह जानकर छुप गया कि मृगशिर उससे बदला लेने के लिए आ रहा था। फिर मृगशिर क्रूर मृगों का शिकार करता सारे ग्रीस में घूमा। उसकी काफी प्रसिद्धि हो गई। प्रसिद्धि से उसे गर्व सा आ गया, उसने प्रतिज्ञा की—"मैं इस भूमि पर एक जानवर न रहने दूँगा।

यह प्रतिज्ञा सुनकर भूदेवी को गुस्सा आया। उसने उस पर भयंकर बिच्छू छोड़ा। मृगशिर ने उसको बाण और तल्वार से मारना चाहा, परन्तु बिच्छू का कुछ भी न हुआ। इसलिए वह बिच्छू से डरकर भागने लगा। उसे रास्ते में सात गन्धर्व कन्याएँ दिखाई दीं। वह बिच्छू की बात भूल गया और उनके पीछे भागने लगा। उन कन्याओं में से एक उसे मिलनेवाली थी कि वे घुग्घु बन गईं और फुर फुर करते आकाश में उड़ गईं। वह मुँह बाये आकाश की ओर देख रहा था कि बिच्छू पीछे से आया और उसने उसे डस लिया।

आज जो हम आकाश में वृश्चक राशि देखते हैं वह, वह बिच्छू ही है और जो उसके पश्चिम में नक्षत्र दिखाई पड़ता है वह मृगशिर है। मृगशिर के पश्चिम में जो और नक्षत्र दिखाई देते हैं वे कृत्तिक हैं। ये तीनों आकाश में अब भी एक दूसरे का पीछा कर रहे हैं।

बुद्धि की भेंट

चित्रपुरी एक छोटा-सा राज्य है। उन दिनों युवराजा चित्रवर्मा तभी तभी गद्दी पर बैठा था। चित्रवर्मा को शासन का इतना अनुभव तो नहीं था। पर बुद्धिमान अनुभवी समर्थ मन्त्रियों और अन्य कर्मचारियों की मदद से शासन कर रहा था।

चित्रपुरी से सटकर अंग राज्य था। वह हर तरह से चित्रपुरी से बड़ा था। उसका राजा वर्धन था। वह सालों से चित्रपुरी को जीतकर अपने राज्य में मिलाना चाहता था।

जब तक चित्रवर्मा का पिता राज्य करता रहा—उसकी इच्छा पूरी न हुई। इस समय चित्रवर्मा राजा था। वर्धन ने सोचा कि उसे अब तक राजनीति और युद्ध की चालें न आती थीं। उसका ख्याल था कि चित्रपुरी को जीतने का यह अच्छा मौका था।

एक दिन उसने मन्त्रियों को बुलवाकर अपनी इच्छायें और अनुमानों के बारे में बताकर उनका परामर्श माँगा।

"आपका अनुमान ठीक है। यह चित्रपुरी को जीतने का अच्छा मौका है। फिर भी विरोधी का बल आदि बिना जाने युद्ध शुरु करना ठीक नहीं है। इसलिए चित्रपुरी के राजकर्मचारियों की बुद्धि पहिले परखी जाये।"

"जो कुछ भी परखना है, पहिले उसे परख लो।" वर्धन ने मन्त्रियों को आज्ञा दी।

उन सबने सोच-सोचकर, एक चिट्ठी लिखकर वर्धन को दी और कहा—"इसे चित्रवर्मा के पास भेजिये। देखें क्या जवाब

आता है, फिर क्या करना है, सोचा जा सकता है।"

उस चिट्ठी में लिखा था—"आप अपने राज्य से कुछ बुद्धि हमारे पास यथाशीघ्र भेजिये।"

चित्रवर्मा को यह चिट्ठी, वर्धन के दूत के द्वारा मिली। उसे पढ़कर वह चकित हो उठा। मन्त्रियों को दिखाया उसे। वे भी चकित हुए।

मन्त्रियों और राजा की सभा हुई। वर्धन की इच्छा पर उनको आश्चर्य हुआ। यदि कोई वस्तु हो, या कुछ और हो, तो भेजा जा सकता है, पर अदृश्य वस्तु को कैसे भेजा जाये। इस विचित्र इच्छा की पीछे, हो न हो, कोई चाल है। अमात्यों ने सोचा कि वर्धन ने उनकी बुद्धि की परीक्षा करने के लिए ही यों लिखा था।

चित्रवर्मा बड़ा चिन्तित हुआ। बहुत सोचा, पर कुछ न सूझा। उस समय सबसे छोटे मन्त्री बृहस्पति ने उठकर कहा—"राजा, मुझे चार महीने का समय दीजिए। वर्धन राजा की इच्छा के अनुसार बुद्धि भिजवाऊँगा। परन्तु इन चार महीनों में आप मुझ से कुछ न पूछिये।"

चित्रवर्मा ने उतनी अवधि उसको दे दी। फिर उसने वर्धन को लिखवाया। "आपकी इच्छा के अनुसार बुद्धि भिजवा दूँगा, परन्तु हमें चार महीने का समय दीजिए।"

चार महीने बीतने को थे कि एक दिन बृहस्पति बड़ा-सा गट्ठर लेकर मन्त्रियों के रहस्य मन्दिर में आया। बृहस्पति ने राजा की ओर मुड़कर कहा—"महाराज, इस गट्ठर में वह "बुद्धि" है, जो वर्धन चाहते हैं। सावधानी से इसे उनके

पास पहुँचाने का प्रबन्ध कीजिये। इस गठ्ठर को चोट नहीं लगनी चाहिए।" गठ्ठर बड़ी होशियारी से बाँधा गया था।

हर कोई अनुमान कर सकता था कि उसमें कोई चीज़ थी। परन्तु किसी ने कुछ न पूछा। चित्रवर्मा ने भी कुछ न पूछा। उसने उस गठ्ठर को अंग देश भेज दिया।

निश्चित अवधि के अन्दर चित्रवर्मा ने बुद्धि भेज दी थी, यह देखकर वर्धन को बड़ा आश्चर्य हुआ।

वर्धन और मन्त्रियों ने बहुत सम्भलकर गठ्ठर खोला। उसमें एक घड़ा था। उसपर पतला-सा ढ़कन था। उसमें एक बड़ा-सा कद्दू था। उसमें वह कद्दू इस तरह रखा गया था कि कहीं खाली जगह न थी। उसका डंठल ढ़कन से ऊपर निकला हुआ था। घड़ा कहीं जोड़ा न गया था, न कहीं टूटा हुआ था। वह नया घड़ा था। यह देख वर्धन और आमात्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उस ढ़कन पर एक पत्र टंगा हुआ था। वर्धन ने उसे खोलकर पढ़ा। उसमें यों लिखा था—"वर्धन जी की इच्छा के अनुसार "बुद्धि" भेजी जा रही है। घड़े के अन्दर बुद्धि है। घड़े को बिना तोड़े कद्दू को बाहर निकालिये। इस भेंट के मिलते ही कृपया सूचित कीजिये।"

राजा और मन्त्री कुछ समय तक एक दूसरे का मुँह देखने लगे। उन्हें एक सन्देह हुआ। इतने छोटे से मुखवाले घड़े में इतना बड़ा कद्दू कैसे गया, फिर वह ठीक घड़े में कैसे समा गया? उन्होंने बहुत सोचा, पर वे कुछ जान न पाये! और फिर घड़ा बिना तोड़े कद्दू बाहर निकालना है। यह ही "बुद्धि" है।

सच कहा जाये तो यह असम्भव है। सब ने मौन हो सिर फेर लिया। अन्त में वर्धन ने अमात्यों को सम्बोधित करके कहा—"हमारे विरोधी, जितना हमने सोचा था उतने मूर्ख नहीं हैं। जो इतने बुद्धिमान हैं उनसे शत्रुता की अपेक्षा स्नेह करना ही अच्छा है।" तुरत उसने चित्रवर्मा के पास यह ख़बर भिजवाई—"आपकी भेजी हुई भेंट मिली। आपकी इस समय प्रशंसा किये बग़ैर नहीं रह सकता। मैं आपका स्नेह और सहृदयता चाहता हूँ।"

यह समाचार पाकर चित्रवर्मा बड़ा आनन्दित हुआ। उसे आश्चर्य भी हुआ कि वर्धन को कैसे उसकी माँगी बुद्धि मिल गई थी। उसने बृहस्पति को बुलवाया। उसका अभिनन्दन और आदर किया। "अमात्य, आपके काम ने मेरी प्रतिष्ठा बनाये रखी। यही नहीं उससे राज्य को भी प्रतिष्ठा मिली। आप जैसे लोगों की हमारे राज्य को बहुत ही आवश्यकता है। पर यह तो बताइये कि आपने किया क्या था?" तब बृहस्पति ने यों कहा। "मैंने बहुत कुछ नहीं किया है। चार महीने पहिले मैंने कद्दू की बेल पाली। थोड़े दिनों बाद उस पर फूल आये और छोटे छोटे कद्दू भी। एक छोटे से कद्दू को छोटे मुँहवाले घड़े में रखा। वह छोटा कद्दू घड़े में ही बड़ा हो गया। जब वह घड़े जितना हो गया तो मैंने उसका डंठल काट दिया। फिर घड़े को होशियारी से एक गट्ठर में बाँधकर आपके द्वारा वर्धन महाराजा के पास भिजवा दिया। घड़ा बिना तोड़े कद्दू ले लीजिये। वह ही "बुद्धि" है। इस आशय का पत्र भी मैंने उसमें रखा। उसका उनके पास से क्या उत्तर आया, आप जानते ही हैं।"

क्यों कि गुरु ने कहा था कि शिक्षा समाप्त हो गई थी, इसलिए अब मधु का घर जाने का समय आ गया था। परन्तु खाली हाथ घर जाना अच्छा न था। इसलिए मधु ने सोचा कि राजा के पास चला जाये और उसे अपनी शिक्षा दिखाकर कुछ ईनाम पाकर जोर शोर से घर जाया जाये तो अच्छा होगा।

वह जंगल में रास्ते पर जा रहा था कि सामने से किसी का चिल्लाना सुनाई पड़ा—"भागा जा रहा है, पकड़ो, पकड़ो!" उसी समय उसने देखा कि एक युवक उसकी ओर भागा आ रहा था और उसका पीछा दो राजसैनिक कर रहे थे।

युवक के बाल बिखरे हुए थे, कपड़े फटे हुए थे। मधु ने सोचा कि वह कोई अपराधी होगा, जो सैनिकों से छूटकर भागा जा रहा था। मधु तो परोपकारी था, फिर राजा के दर्शन के लिए जा रहा था। इसलिए उसने उस युवक को पकड़कर राज सैनिकों को सौंप दिया। उन्होंने उस युवक के मुख में कपड़े ठूस दिये, उसके हाथ बाँध दिये। फिर मधु से कहा—"आपने समय पर हमारी मदद की।"

"तुम न हिचको, यदि तुम मुझ से कुछ सहायता चाहते हो तो कहो।" मधु ने कहा।

"तो जब तक इसका काम नहीं हो जाता तो हमारे साथ ही रहो। एक बार हमें यह मिला था, फिर भी छुड़ाकर हमें पीट पाटकर भाग निकला। तुम मिल गये थे, इसलिए हमें वह मिल सका।" सैनिकों ने कहा। "तो चलो, चलें!" कहकर मधु उनके साथ चल पड़ा। वे जंगल पार कर एक निर्जन गुफ़ा के पास आये।

"यहाँ सवेरा होने से पहिले कुछ काम है। देवी की पूजा करनी है। यहीं रहना है।" कहकर उन्होंने मधु के बारे में जानना चाहा। मधु ने कहा कि शिक्षा समाप्त करके वह घर जा रहा था।

एक राजसैनिक ने कहा—"मैं अब नगर जा रहा हूँ। मैं अपने सरदार से कहूँगा कि तुम्हें अच्छा ईनाम दें। क्योंकि तुमने हमारी बहुत मदद की है।" वह चला गया।

उसके जाने के थोड़ी देर बाद दूसरे राजसैनिक ने कहा—"ये दो तीन घंटे तक नहीं आयेगा। इस दुष्ट ने हमें बहुत पीट दिया था। सारा शरीर दुख रहा है। कुछ सो लूँ। तुम ज़रा अच्छी तरह देखते रहना इसे।" वह लेटकर सो गया।

तब तक उन्होंने उस युवक को एक पेड़ के तने से बांध दिया था। कुछ देर बाद युवक ने ईशारा किया कि उसे प्यास लग रही थी। मधु तो परोपकारी था ही, वह नाले तक गया और दोने में पानी लाया। युवक के मुख से उसने कपड़े निकाल दिये। उस युवक ने पानी पीकर मधु से कहा—"ये राजा के द्रोही हैं। मैं राजा का लड़का हूँ। इन दोनों सैनिकों को हमारे सेनापति ने मेरा अंगरक्षक नियुक्त किया था। मैं इनको साथ लेकर अन्धेरा होने के समय नगर के बाहर के मन्दिर के लिए निकला। एक निर्जन जगह पर इन दोनों ने मुझ पर हमला किया और मुझे बाँधकर जंगल के रास्ते घसीटने लगे। रास्ते में हाथ की रस्सियाँ जैसे तैसे खोलकर इन्हें खूब पीटकर मैंने भागने की कोशिश की। इतने में तुम यम की तरह आ गये। ऐसा लगता है, सेनापति कोई बड़ी चाल चल रहा है। शायद वह हमारा

राज्य हड़पना चाहता है। ये दुष्ट यहाँ मुझे बलि दे देंगे। इन द्रोहियों में एक शहर गया है। शायद वह सेनापति से कहने गया होगा कि मैं पकड़ा गया हूँ। तुम तो इन लोगों के साथी नहीं जान पड़ते हो। तब तुम क्यों इनकी मदद कर रहे हो!"

मधु को ये बातें सुनकर अचरज हुआ। यह सोचकर कि परोपकार की भावना ने उससे राजद्रोह करवाया था उसने कहा—"राजकुमार, मैं यह सब झमेला कुछ नहीं जानता। मुझे तो यही पढ़ाया गया था कि हर किसी का भला करना अच्छा है। इन राज सैनिकों ने मेरी सहायता माँगी और मैंने उनकी सहायता कर दी। मैं आपको छोड़ दूँगा। जो आपके विरुद्ध षड़यन्त्र कर रहे हैं, उनको दण्ड दीजिये।" उसने युवराज के बन्धन खोल दिये।

"तुम भी मेरे साथ चले आओ। नहीं तो तुम पर आफ़त आ सकती है।" युवराज ने कहा।

"कोई बात नहीं, मैं ताकतवर हूँ, इस तरह के दस आदमियों की ख़बर ले सकता हूँ। मैं देखूँगा कि ये भाग न निकलें। आप जाकर विश्वसनीय राज-सैनिकों को बुलाकर लाइये।"

युवराज के चले जाने के बाद मधु पेड़ों के पीछे जाकर प्रतीक्षा करने लगा कि कब वह सैनिक उठता है। जब वह उठा, तो उसने देखा कि युवक न था, वह घबराया। तब मधु ने सामने आकर पूछा—"यह क्या! क्यों उस द्रोही को छोड़ दिया!"

"छी, तुमने ही यह काम किया होगा।" राज-सैनिक का वेष पहिने व्यक्ति ने कहा।

"मैं क्यों छोड़ूँगा? यदि छोड़ना ही होता, तो उसे तुम्हें क्यों पकड़कर देता? मैं तो इस आशा में बैठा हूँ कि तुम्हारा सरदार मुझे कुछ ईनाम देंगे। मैं ज़रा प्यास बुझाने गया और तुमने इस बीच मेरी आँखों में धूल झोंक दी। अब तुम्हारे सरदार कैसे विश्वास करेंगे कि जब वह भाग रहा था, तो मैंने उसे पकड़ा था, तुम्हें देखकर तो लगता है, जैसे तुम राजद्रोही हो।" उसने राजद्रोही पर रौब गाँठा।

वह हक्का-बक्का रह गया। उसने कहा—"मैं कुछ नहीं जानता। मैं अभी अभी उठा हूँ। मैंने सोचा था कि तुम दोनों मिलकर भाग गये थे। कैसे वह अपने आप छूटकर भाग गया? जब हमारा सरदार आयेगा, तो उससे क्या कहूँगा?" वह यों चिन्तित हो रहा था कि पहिला राज-सैनिक, सेनापति और दो-तीन सैनिकों के साथ आया। "कहाँ है? यदि तुमने उस राजकुमार का सिर मेरे सामने रखा, तो तुम दोनों को जागीर दूँगा।" सेनापति ने यह कहकर इधर-उधर देखा।

"हुज़ूर, मैंने इनकी मदद की है। मेरी मदद न भूलिये।" मधु ने कहा।

जब सेनापति को मालूम हुआ कि राजकुमार भाग निकला था, तो वह क्रुद्ध हो उठा। वह गरजा, तल्वार निकालकर, दोनों सैनिकों को मारने लपका।

"यह सच है कि राजकुमार मिल गया था। मैंने स्वयं उसे पकड़ा था। यहाँ हम उसे लाये। पेड़ से उसे बाँधा। यह जब आपके पास गया था, तब राजकुमार पेड़ से बँधा हुआ था। इसलिए इस पर नाराज़ होना ठीक नहीं है। यह भी सच है कि कुछ देर के लिए यह दूसरा सैनिक सो गया था। यह भी उसकी गल्ती नहीं कही जा सकती। उसे राजकुमार ने खूब पीटा था। फिर वह तभी सोया था; जब मैंने उसे वचन दिया था कि मैं पहरा दूँगा। पहरे पर रहते हुए प्यास बुझाने के लिए जाना मेरी ही गल्ती है। मैं पीकर पानी दोने में लाया, कहाँ यह सोकर उठकर पानी न माँगने लगे। यह देखिये, पानी अब भी वैसा का वैसा ही पड़ा है। यदि राजकुमार भाग निकला है तो सचमुच अपराध मेरा है।" मधु ने कहा।

राजकुमार किस तरह भाग गया था, सेनापति न जान सका। "वे रस्सियाँ

भी न थीं, जिनसे वह बाँधा गया था। कहीं वह किसी पौधे में न घुस गया हो, उसे खोजना अच्छा है।" मधु के सलाह देने पर वे वहाँ के पौधे खोजने लगे।

इतने में राजकुमार सौ योद्धाओं को लेकर उस जगह आया। सेनापति और उसके नौकर, चार सैनिकों को पकड़ लिया।

जब सब मिलकर नगर गये तो मधु भी उनके साथ गया। सेनापति की सुनवाई हुई। उसने कहा कि वह कुछ न जानता था। जो राजकुमार को पकड़कर ले गये थे, उनको सूली पर चढ़वा दिया जाये। मधु ने गवाही दी कि सेनापति ने कहा था कि यदि किसी ने राजकुमार का सिर दिखाया तो उसको जागीर दूँगा। सेनापति को मौत की सज़ा दी गई।

मधु उस दिन राजपरिवार के लिए देवता-सा हो गया। उसे बहुत से उपहार दिये गये। उसका सम्मान किया गया। आतिथ्य किया गया। राजकुमार ने उसको अपनी नौकरी में रहने के लिए कहा।

मधु ने कहा कि वह घर जाकर, माँ को देखकर आयेगा, क्योंकि घर छोड़े उसे बहुत दिन हो गये थे। जो उपहार उसे दिये गये थे और जो उपहार रानी ने उसकी माता के लिए दिये थे, उन्हें लेकर वह घर की ओर निकला।

"रास्ते में शायद चोर डाकुओं का डर हो, सैनिकों को साथ भेजता हूँ।" राजकुमार ने कहा।

"मुझे कोई डर नहीं है। मैं ही अपना रक्षक हूँ।" कहकर मधु राजकुमार से विदा लेकर चल पड़ा।

(अगले मास "प्राण रक्षण")

जिसका उसका

भाई-बहिन
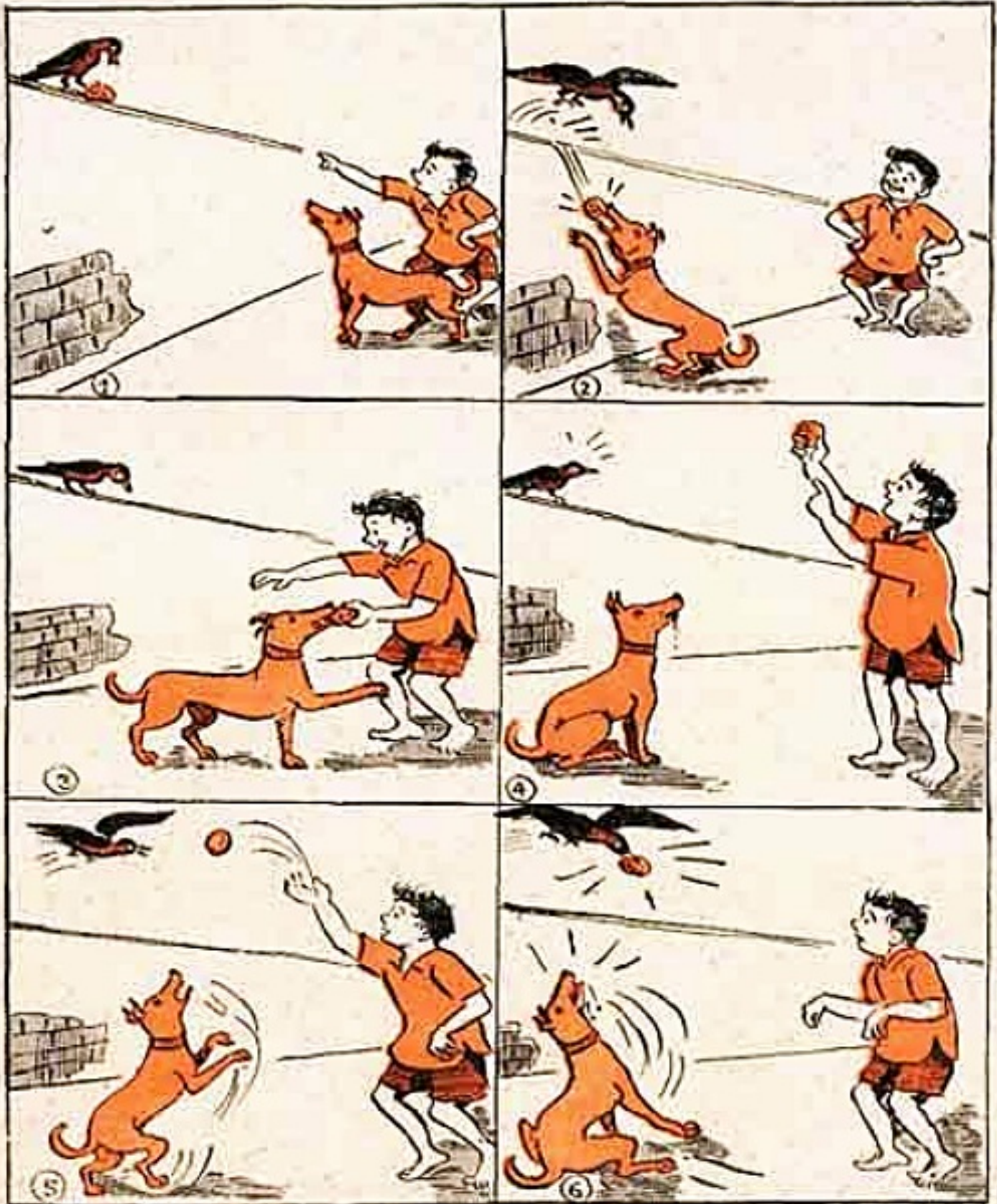
डमास्कस नगर में अय्यूब नामक व्यापारी के दो सुन्दर बच्चे थे। अय्यूब के लड़के का नाम घानी और लड़की नाम फितना था। वे अभी सयाने हुए थे कि अय्यूब यकायक मर गया। उसकी सारी सम्पत्ति बच्चों की हो गई।

जब वह अपने पिता की सम्पत्ति देख रहा था, तो उसने कुछ गठ्ठरों को देखा। उन सब पर लिखा था "बगदाद" इस तरह के सौ गठ्ठर थे। उन में रेशम और जरी के थान थे। यही नहीं सौ मर्तबानों में कस्तूरी की डब्बियाँ भी थीं। इन पर भी "बगदाद" लिखा था। उन सबको बगदाद ले जाकर अय्यूब ने बेचने की सोची थी। पर मौत के कारण वह यह न कर सका।

घानी ने निश्चय किया कि जो काम उसका पिता न कर पाया था, वह करेगा। वह व्यापारियों के एक और काफिले में शामिल हो गया। किराये के ऊंटों पर उसने अपना सारा माल लदवा दिया। बहिन से बिदा लेकर वह बगदाद के लिए निकल पड़ा।

घानी सकुशल बगदाद नगर पहुँचा। उसने एक अच्छा घर किराये पर लिया। उसे किराये के गद्दों, पलंगों, कालीनों, परदा आदि से अच्छी तरह सजाया।

अपना माल उतरवाकर, अपने नये घर में कुछ आराम किया। फिर वह कुछ चीज़ें लेकर बगदाद की मंडी में गया। व्यापारियों के मुखिये ने उन्हें देखते ही, जो कुछ दाम देना चाहता था, बताया। यदि घानी उस दाम पर बेचता, तो उसको लगाई हुई पूँजी का दुगना मिलता। घानी बड़ा खुश हुआ। वह साल भर

सुरेश

बगदाद में रहा। वह अपने माल को कुछ कुछ लाभ पर बेंचता रहा।

दूसरे साल के आरम्भ में, एक दिन हमेशा की तरह जब वह मंड़ी में गया, तो सब दुकानें बन्द थीं। मंड़ी की ड्योढ़ी पर ही ताला लगा था। इसका कारण पूछने पर बताया गया कि एक मुख्य व्यापारी मर गया था और लोग, उसके शव के साथ कब्रिस्तान चले गये थे। यह सोच कि उसका कब्रिस्तान जाना ठीक था, घानी भी उन लोगों में शामिल हो गया।

शव को बड़ी मस्जिद के पास रोका गया—फिर थोड़ी देर के बाद उसे कब्रिस्तान पहुँचाया गया। वहाँ एक तम्बू था, उस में मशालें और मोमबत्तियाँ जल रही थीं। शव को गाड़ दिया गया—इसके बाद बहुत देर तक कुरान पढ़ा गया। घानी इसी सोच में था कि कब घर चला जाये—वह वहाँ इस तरह बैठा रहा, जैसे काँटों पर बैठा हो।

इस कर्मकाण्ड के बाद दावत हुई। सब ने पेट-भर कर खाया, पिया। फिर सब कब्र के चारों ओर चुपचाप बैठ गये। यह सोच कि वे रात भर उसी तरह बैठे रहेंगे, घानी कोई बहाना करके चुपचाप वहाँ से खिसक गया।

उसे डर था कि चोर उसके घर में न घुस जाये। घर में सिवाय उसके कोई न था। वह नया था। सब जान गये थे कि उसके पास बहुत-सा पैसा था। पैसा अधिक हो और घर में कोई न हो, तो चोर क्या उसे छोड़ेंगे!

कब्रों के बीच में से बचते-बचते नगर के द्वार तक जाते-जाते, आधी रात हो गई। द्वार बन्द कर दिये गये थे। रह

रहकर गीदड़ों का चिल्लाना, भेड़ियों का शोर सुनाई पड़ रहा था। घानी को डर लगा। चोरों का भय तो क्या उसे अब जान का ही डर लगने लगा था यह सोच कि रात-भर उसे सिर ढांपने के लिए कहीं जगह मिलेगी कि नहीं। वह खोजता-खोजता एक मकबरे के पास गया।

वह मकबरा कुछ अलग-सा था। उसके चारों ओर ऊँची चार दीवारी थी।

आहाते में एक सुपारी का पेड़ था। घानी उस मकबरे में जाकर लेट गया। पर उसे नींद न आई। यह सोच कि उसके चारों ओर भूत मँड़रा रहे थे, वह सो न सका।

इतने में दूर कहीं आहट हुई। घानी चार दीवारी के दरवाज़े के पास गया, उसने देखा कि शहर की ओर से कुछ लोग एक सन्दूक को लेकर उसी मकबरे की ओर आ रहे थे। दो नीग्रो सन्दूक उठाये हुए थे और तीसरा आगे आगे मशाल लिये चल रहा था।

घानी न सोच पाया कि क्या किया जाये, वह सुपारी के पेड़ पर चढ़ गया और पत्तों के पीछे छुप गया।
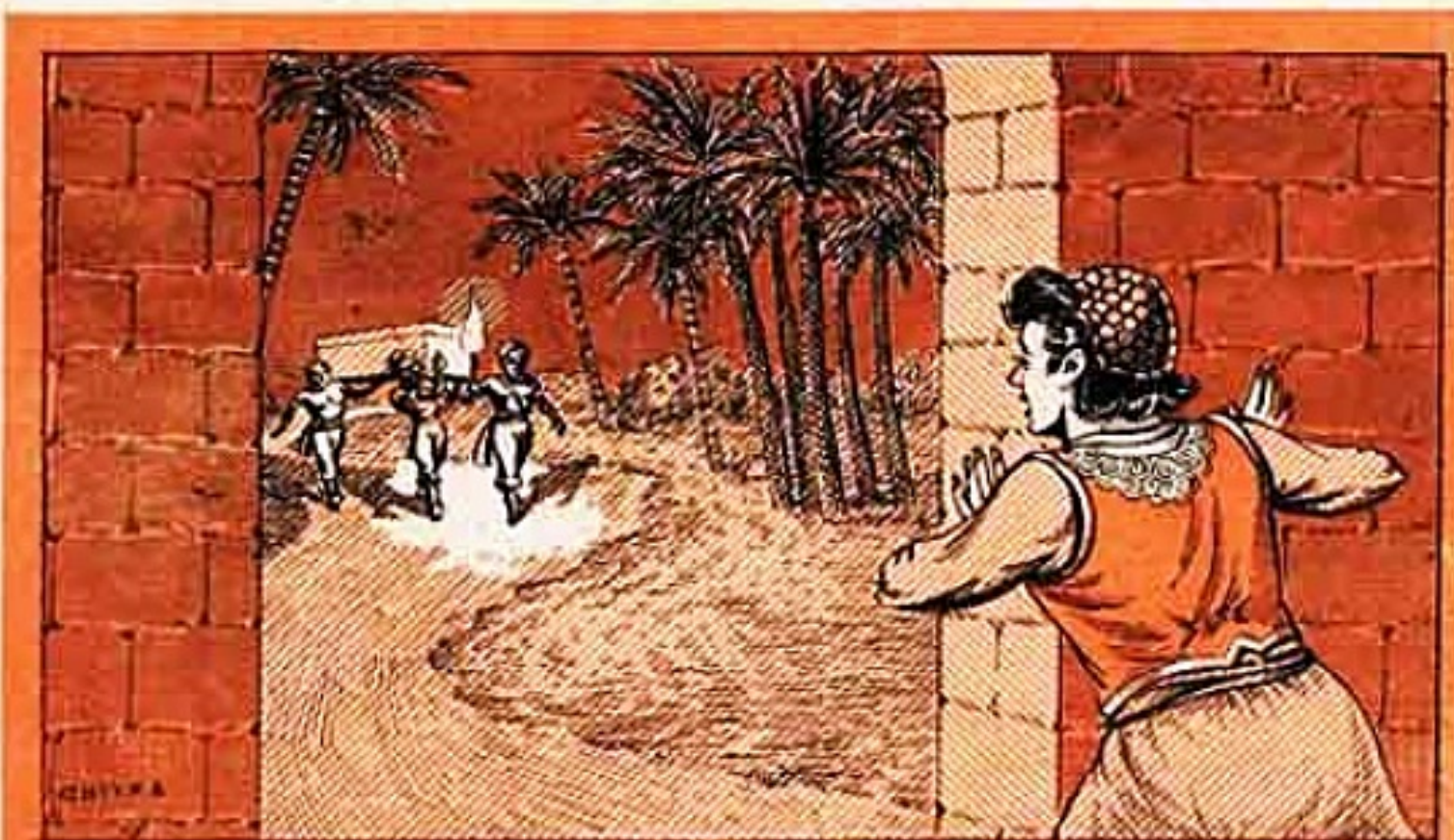
थोड़ी देर में, तीनों नीग्रो उस अहाते में आये। सन्दूक को उतार कर, उसके लिए गढ़ा खोदकर, उसे उसमें गाड़ कर, वे अपने रास्ते चले गये।

उनके जाने के बाद भी घानी पेड़ पर ही रहा—सवेरा होने के बाद उतर कर आया। मिट्टी हटा कर, उसने वह सन्दूक निकाला, जो नीग्रो गुलाम गाड़ गये थे। उस सन्दूक पर ताला लगा हुआ था। जब घानी ने उस ताले को पत्थर से तोड़कर सन्दूक खोला तो उसमें एक स्त्री दिखाई दी।

घानी बड़ा चकित हुआ। उसने सोचा था कि वह मर गई होगी, पर वह तब भी साँस ले रही थी। वह बड़ी सुन्दर भी लगी।

घानी ने सोचा कि उसके किसी शत्रु ने उसको बेहोशी की दवा दे दी होगी और उसे वहाँ गड़वा दिया होगा। घानी ने उसे सन्दूक में से निकलवाया और उसे ज़मीन पर लिटा दिया। रोशनी में उसको वह औरत और भी सुन्दर दिखाई दी और उसने देखा कि उसके शरीर पर गहने भी थे। गहनों में मोती हीरे चम-चमा रहे थे।

बाहर रखते ही उसने एक बार छींका, फिर उल्टी कर दी। गोली के बराबर भाँग का गोला उसने कै कर दिया। पर उसे अभी ठीक तरह होश न आया था, उसने यों पुकारा जैसे अपनी किसी दासी को बुला रही हो। "मुझे प्यास लग रही है, पीने के लिए कुछ दो। क्यों नहीं कोई बोलती?"

जब कोई न बोला, तो उसने आँखें खोलीं और भय में कहा—"यह क्या? मैं कहाँ हूँ? मेरा घर कहाँ है? यह कब्रिस्तान क्या है?"

घानी ने आगे बढ़कर कहा—"मेरा नाम घानी है। मैं नहीं जानता कि आपका क्या शुभ नाम है। पर आपको डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। आपत्ति के समय आपकी मदद करने के लिए खुदा ने मुझे भेजा है।"

घानी की शक्ल सूरत और बातों से उस स्त्री को कुछ ढाढ़स हुआ। उसने घानी से जाना कि उसको तीन नीग्रो गुलाम वहाँ सन्दूक में लाकर, गाड़कर चले गये थे। उस स्त्री ने उससे कहा—"आप मुझे इस सन्दूक में रख दीजिये और जल्दी ही एक खच्चर लाइये, मुझे सन्दूक में रखकर उस पर लादकर, अपने घर ले जाइये। मैं वहाँ आपको अपनी सारी कहानी सुनाऊँगी। मेरी मदद करने के कारण आपका बहुत उपकार भी होगा।"

तब तक अच्छी तरह सवेरा हो चुका था। घानी एक खच्चर लाया, उस स्त्री को सन्दूक में रख, उस पर लादकर निकला। उसके सौन्दर्य ने उसको आकर्षित कर लिया था। वह सपने लेने लगा कि वह उससे विवाह करने के लिए मान जायेगी और तभी सचमुच उसका भाग्य खिलेगा।

घानी के घर और उसके घर में रखे, अमूल्य रेशमी वस्त्रों को देखकर वह स्त्री जान गई कि वह कोई बड़ा व्यापारी था। उसने उसको गौर से देखकर यह भी जान लिया कि वह सुन्दर युवक था।

घानी घर पहुँचते ही, फिर बाजार चला गया। वहाँ से उसके खाने के लिए चीज़ें, पीने की चीज़ें और कुछ फूल ले आया। उन सब को देखकर वह इतनी खुश हुई कि घानी का प्रेम दुगना हो गया। भोजन के बाद, घानी ने उसकी कहानी सुननी चाही। उसने यों कथा सुनानी शुरू की—

"मेरा नाम कूतल कुलूब है। मैं खलीफ़ा के यहाँ पैदा हुई और वहीं पाली पोसी गई। मैं ज्यों ज्यों बड़ी होती गई, त्यों त्यों मेरा सौन्दर्य खलीफ़ा के दिल को मचलाने लगा। उसने मुझ से शादी करनी चाही, मेरे लिए उसने अलग रहने की जगह की व्यवस्था की। दस दासियों को मेरे लिए नियुक्त किया। मुझे कितने ही उपहार दिये, मेरे सारे शरीर पर गहने लगा दिये। हमारे विवाह के होने में एक रुकावट आई। वह यह कि खलीफ़ा को युद्ध पर जाना पड़ गया।

"जब से खलीफ़ा को मुझ पर प्रेम हो गया था, तब से बेगम जुबेदा मुझ से ईर्ष्या करने लगी। मेरी दासियों में से एक उसकी कभी दासी थी। उसे घूँस देकर, उसने मुझे मरवाने की कोशिश की। खलीफ़ा दूर थे, इसलिए उसको यह करने का अच्छा मौका भी मिला।

"कल इस दासी ने मुझे पीने के लिए बहुत-सी शराब दी। जब मैं बेहोश थी, तो उसने मेरे मुख में भाँग की गोली डाल दी होगी। मुझे याद है कि मैंने इस तरह हाथ पैर मारे जैसे मेरी जान ही जा रही

हो। जब मैं बिलकुल बेहोश हो गई हूँगी, तब जुबेदा बेगम ने मुझे सन्दूक में रखवा दिया होगा और नीग्रो गुलामों से मुझे गड़वा दिया होगा। आपने समय पर आकर मेरे प्राण बचाये।"

अब मुझे यह चिन्ता है कि जब खलीफ़ा वापिस आयेंगे और मुझे न देखेंगे तो क्या सोचेंगे। एक और बात भी मन में उठती है कि अगर मैं तब तक खलीफ़ा की न हो गई होती, तो आपको ही दिल से चाहती। अब वह भी नहीं कर सकती। बहुत लाचारी है।"

जब घानी ने सुना कि वह खलीफ़ा से शादी करने जा रही थी, तो उसके सपनों के महल एकदम ढह गये। उसका प्रेम पीड़ा बन गया। जब उसे मालूम हुआ कि वह भी उससे प्रेम करने लगी थी, तो उसकी पीड़ा, दस गुना और भी बढ़ गई। उसकी हालत का बर्णन नहीं किया जा सकता। वह कुतल कुलाब को चाहे बगैर भी नहीं रह सकता था। वह यह भी न भूल सकता था कि वह भी उसे चाह रही थी। वह उसे अपनी बनाकर खलीफ़ा को धोखा भी नहीं दे सकता था। वह जहाँ तक सम्भव था, उससे दूर रहता, अपने असफल प्रेम में निराश हो दिन बिताने लगा। उसने उसके आतिथ्य सत्कार में कोई कमी न आने दी।

दोनों मिलकर भोजन करते। गप्पें लगाते। उसको भी घानी पर रोज प्रेम बढ़ता जाता था। वह उसे छुपा भी न सकी। फिर भी घानी ने सब्र से काम लिया और उससे पवित्र प्रेम निभाता रहा।

(अभी है)

डरपोक

उस दिन बाबा बुढ़िया की मिठाई लाया।

उसने हरेक को एक एक दी। सब ने तो मिठाई ले ली। पर बाबू उसे देख कुछ डरा और उसने मुँह फेर लिया।

"अच्छी है, ले लो बाबू।" बाबा ने बहुत कहा, पर बाबू ने उस तरफ़ न देखा।

"देख वे सब किस तरह खा रहे हैं।" बाबा ने कहा।

"मुझे यह अच्छी नहीं लगती।" बाबू ने कहा।

बच्चों ने हँसकर कहा—"बिल्कुल झूट बाबा, उसे बुढ़िया की मिठाई से डर है।"

"हूँ...." बाबा ने कुर्सी पर आराम से बैठकर नास की डिबिया निकाली।

"अच्छी कहानी सुनाओ, बाबा।" बच्चों ने उसको घेर लिया।

"कहानी? और कहानी क्या सुनाऊँ? डरपोक की ही कहानी सुनो।" सुंघनी नाक में डालकर यूँ धीमे धीमे कहानी सुनाने लगा।

एक गाँव में एक किसान रहा करता था। उसकी चार पाँच सेन्ट ज़मीन थी। वह बड़ा नरम और डरपोक भी था। गीदड़ को देखकर, कहते हैं, हर कोई शिकारी बन जाता है। उसी तरह हर कोई उस किसान को देखकर उस पर रौब गाँठता। उसके साथ अन्याय करता। वह मनुष्य सब कुछ सह लेता और यह सोच सन्तोष करता कि वह बहुत शान्तिशील था। इस किसान के खेत के पास एक और की ज़मीन थी। उसको भी इस किसान की परवाह न थी। जो कुछ मर्ज़ी आती वह करता।

एक दिन किसी किसान ने आकर कहा—"क्यों भाई, तुम्हारे बग़लवाले किसान ने तुम्हारे खेत में अपनी भैंस हाँक दी थी?"

"शायद भैंस ग़लती से चली गई होगी। इसके लिए भी क्यों झगड़ा किया जाये?" डरपोक किसान ने कहा।

अगले दिन एक और आदमी ने कहा—"तुम्हारी बग़लवाला किसान तुम्हारी फसल काट ले गया है। जाकर तो देख लो।"

"बिचारे के खेत में इस साल फसल नहीं हुई है। काट रहा है तो काटने दो। इतने में मेरा कुछ कम नहीं हो जायेगा।" डरपोक किसान ने कहा।

जब तक चलता है चलने दो। यह सोचकर बग़लवाला किसान डरपोक किसान की बिल्कुल भी परवाह न करता। उसने डरपोक किसान की मेंढ़ पर के पेड़ों की टहनियाँ भी काट लीं।

यह सुनते ही डरपोक को ऐसा लगा जैसे किसी ने घाव पर नमक छिड़क दिया हो। वह गुस्से में बग़लवाले किसान के पास गया। "अरे, सोचता रहा कि जाने दो, जाने दो। और तुम सिर पर चढ़ते गये। तुमने क्यों मेरी मेंढ़ की पेड़ों की टहनियाँ काटीं?"

"अरे वाह, यह पूछो कि मैंने पेड़ क्यों नहीं काट दिये? तुम्हारे पेड़ों की जड़ें मेरे खेत में आ गई थीं। उनकी टहनियाँ मेरे खेत में आईं। काटे हैं तो क्यों नहीं काटूँगा?" बग़लवाले किसान ने कहा।

डरपोक किसान ने कहा—"तुमसे भी क्या कहूँ? तुमको बग़ल में आने देना ही मेरी असल में ग़लती है।" कहकर वह दुम दबाकर घर चला गया।

इस बीच भरत ने थोड़ी दूर पर राम का आश्रम देखा। वशिष्ठ को उसने अपनी माताओं को लाने के लिए कहा और सुमन्त और शत्रुघ्न को लेकर आगे गया। पर्णशाला के आस पास मार्ग सूचक चिन्ह थे। जगह जगह ईन्धन जमा था। पेड़ों पर भी कई चिन्ह थे।

जल्दी ही भरत पर्णशाला के पास पहुँचा। आश्रम के ईशान्य दिशा में अग्नि वेदिका देखी, फिर उसने आश्रम में राम को तपस्वी वेश में देखा। बगल में सीता और लक्ष्मण थे। राम को देखते ही भरत के मन में दुख उमड़ आया। वह राम के पास भागा भागा गया। आँसू बहाने लगा, उसे राम के चरण भी न दिखाई दिये। वह नीचे गिर गया। उसके मुख से बात न निकली।

शत्रुघ्न ने भी रोते रोते राम के चरण छुये। राम भी भरत और शत्रुघ्न को गले लगाकर रोये।

उन्होंने भरत पर प्रश्नों की बौछार कर दी। "भाई, तुम्हें बहुत दिनों बाद देखा है। बहुत बदल गये हो। पहिचान भी न सका। बहुत सन्तोष है। अब क्यों यों अरण्य में आये हो! पिता जी बहुत दुखी तो नहीं हैं! क्या मातायें

हैं। मैं केकैय राजा के नगर में था कि वे गुज़र गये। तुम्हें, सीता और लक्ष्मण को गया देख, उनको इतना दुख हुआ कि वे जीवित न रह सके। पहिले पिता जी का तर्पण करो। वे तुम्हें याद करते करते गये थे। इसलिए तुम्हारा तर्पण ही उन्हें पहुँचेगा।"

पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर राम मूर्छित हो गये। सीता, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने उन पर ठन्डा पानी छिड़क कर उनकी मूर्छा दूर की। राम के दुख की सीमा न थी। मेरे दुःख में पिता मर गये और मैं उनकी अन्त्येष्टिक्रिया भी न कर सका, वे यह सोच बड़े दुःखी हुए।

फिर वे पिता को उदक दान करने के लिए नदी की ओर चले। क्योंकि ऐसे समय स्त्रियों और बच्चों को आगे आगे चलना होता है उन्होंने आगे आगे सीता और लक्ष्मण को चलने के लिए कहा।

सीता, राम और लक्ष्मण ने मन्दाकिनी नदी के घाट में स्नान किया और दशरथ का तर्पण किया। पिण्ड आदि भी दिये। फिर वे तीनों पर्णशाला वापिस गये।

कुशल हैं! क्या तुम राज्य धर्म का पालन करते हुए शासन कर रहे हो! किसी ने तुम्हारे राज्य का अपहरण तो नहीं किया है! मन्त्री क्या तुम्हारी सहायता ठीक ठीक कर रहे हैं!"

भरत ने यह सोच कि राम सोच रहे थे कि उसका पट्टाभिषेक हो गया था। कहा—"भैय्या, क्या हमारे वंश में बड़े भाई के जीवित रहते छोटे भाई के पट्टाभिषेक की परम्परा कहीं है! हमारे साथ अयोध्या आओ और हमारे वंश का उद्धार करो। अब हमारे पिता भी नहीं

वे लोग, जो पीछे रह गये थे, पर्णशाला से रोना धोना सुनकर भागे भागे उस तरफ़ आये। उन्होंने मुनि वेश में राम और उनके भाईयों और सीता को देखा। राम को कुछ ने नमस्कार किया। कई का राम ने आलिंगन किया।

इस बीच, दशरथ की पत्नियाँ वशिष्ठ के साथ, धीमे धीमे चलतीं, मन्दाकिनी पार करके, पर्णशाला की ओर आयीं। उनको, स्नान करने का घाट और पास ही पड़े पिण्डोदक आदि दिखाई दिये। कौशल्या ने सुमित्रा से कहा—"शायद वे लोग यहीं स्नान करते हैं! शायद तुम्हारा लड़का, राम के लिए यहीं से पानी ले जाता है! अब लक्ष्मण के कष्ट दूर हो जायेंगे। भरत राम को लाकर पट्टाभिषेक जो करने जा रहा है। यह देखा, पिण्ड.... उस दशरथ महाराजा के लिए, जिसने सारी भूमि पर शासन किया था, यह भी क्या पिण्ड है! शायद राम स्वयं इसे खाता होगा। यह सोचते ही मेरा दिल टूटा जाता है।"

जब वे पर्णशाला के पास पहुँची, तो राम ने उठकर उनको साष्टाग नमस्कार किया। सीता भी उनको नमस्कार करके

अलग खड़ी हो गई। वनवास के कारण सीता कमजोर हो गई थी, कौशल्या ने उसको गले लगाकर कहा—"जनक महाराज की लड़की हो दशरथ महाराजा की पुत्र वधू हो। तब भी तुम्हें वनवास करना पड़ रहा है, बेटी।"

राम और वशिष्ठ पास ही बैठे हुए थे। राम के एक ओर भरत, मन्त्री, और नगर के प्रमुख बैठे थे। अब समय आ गया था, जब भरत को कहना था कि वह किस काम पर आया था। सब इस प्रतीक्षा में थे कि वह क्या कहता है।

राम ने ही बात छेड़ी—"भरत, तुम जटा बढ़ाकर, वल्कल पहिनकर इस जंगल में क्यों आये! मैं जानना चाहता हूँ।" उन्होंने कहा।

भरत ने यों कहा—"हमारे पिता, तुम्हें जंगल भेजकर, तुम्हारे वियोग में गुज़र गये। उनसे यह पाप कृत्य करवाया था मेरी माँ कैकेयी ने ही। इसलिए वह तो नरक जायेगी ही। कम से कम तुम उसके लड़के पर तो कृपा करो। आओ, और राज्याभिषेक करवाओ। इसीलिए हमारी मातायें और यह प्रजा तुम्हें खोजती खोजती यहाँ आई हैं। उनकी इच्छा पूरी करो, इतने सारे लोगों की इच्छा को न ठुकराओ।"

यह कहकर, भरत ने राम के सामने इस तरह साष्टाङ्ग किया कि भरत का मस्तक राम के चरण छूने लगा।

राम ने भरत को आलिंगन करके निश्वास छोड़ते हुए कहा—"भाई, तुमने बचपन के कारण अपनी माँ की निन्दा की है। बड़ों को ही छोटों को डाँटने डपटने का अधिकार है। जैसे हम पिता का आदर करते हैं, वैसे ही माता का करना
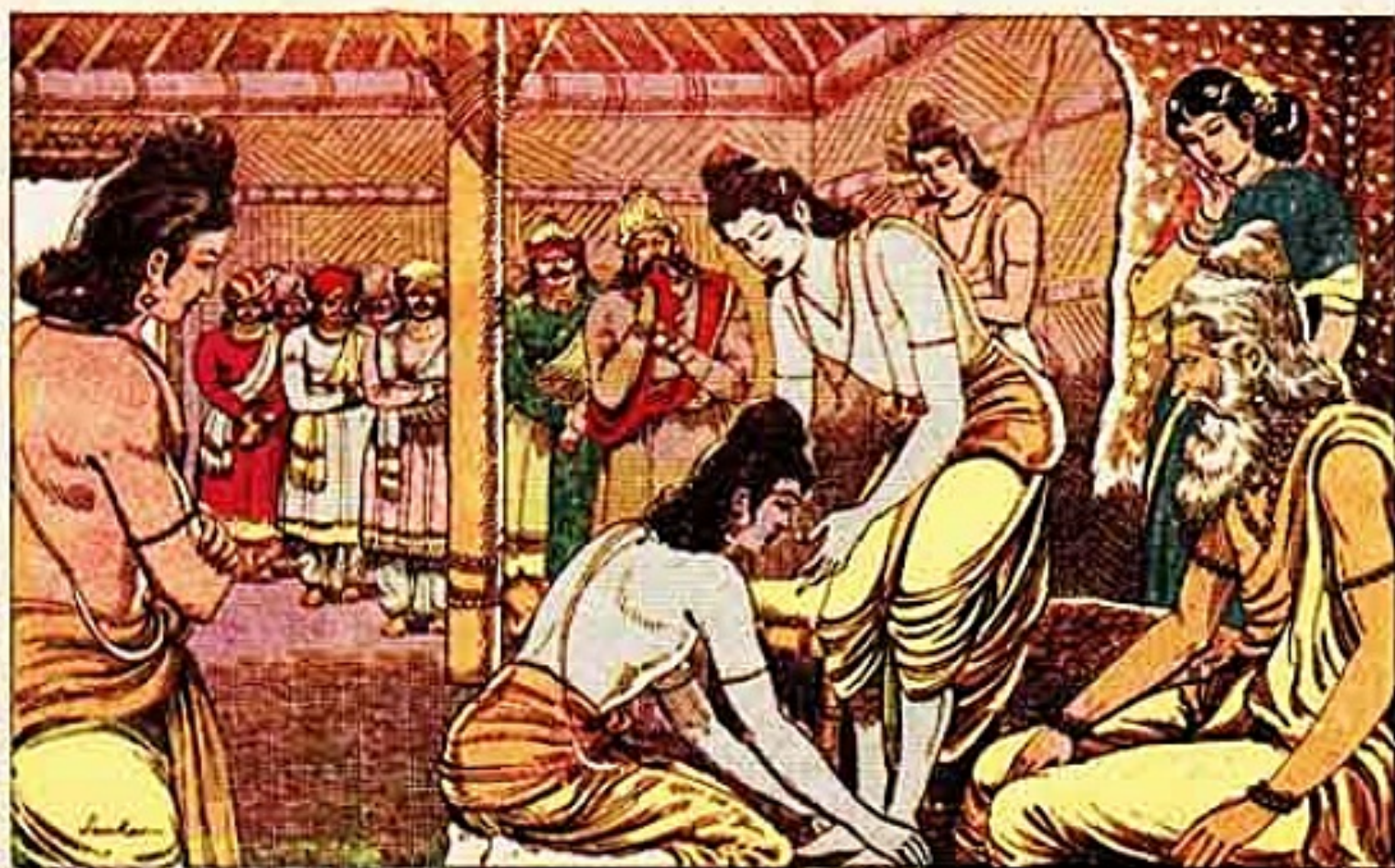
चाहिये। जब बड़ों ने मुझे जंगल में जाने के लिए कहा है, तो मैं कैसे राज्य कर सकता हूँ? तुम अयोध्या पर राज्य करो और मुझे वनवास करना है। यह पिता और प्रजा के समक्ष निश्चित किया गया नियम है। चौदह वर्ष के बाद, वनवास के समाप्त होने पर पिता की आज्ञा के अनुसार राज्य करूँगा। पिता की आज्ञा के पालन से अधिक मेरे लिए राज्य करना नहीं है।"

वह रात यूँ ही गुज़र गई। अगले दिन सब स्नान करके जप, होम आदि करके राम के पास आये। कोई नहीं बोला। इस नीरवता में भरत ने राम से कहा—"मेरी माता का ख्याल करके मुझे तुमने राज्य दिया है। मैं तुम्हें उसे दे रहा हूँ। सुखपूर्वक शासन करो। इस राज्य भार को उठाने में तुम ही समर्थ हो। पिता जी ने तुम्हें छुटपन से ही राजा के उपयुक्त शिक्षा दिलवाई है। यदि तुम राजा न बने, तो उनका सारा परिश्रम व्यर्थ जायेगा।"

भरत की ये बातें सुनकर सब ने बहुत सन्तोष व्यक्त किया। उसकी प्रशंसा की।

भरत के लिए यही उचित है कि पिता की आज्ञा के अनुसार उनके पदचिन्हों पर चलता राज्य करे और पिता की आज्ञा के अनुसार वनवास करना ही राम का धर्म था।

सब सुनकर भरत ने कहा—"मैंने धर्म के भय के कारण माता को दण्ड नहीं दिया। पिता की निन्दा नहीं की। पर क्या यह अधर्म नहीं है कि वे पत्नी के दास होकर, उसके यह कहने पर कि वह बिष खा लेगी डरकर उसे वनवास भेज दें, जिसे राज्य करना था। क्या यह लड़के का कर्तव्य नहीं है कि पिता के अन्याय को ठीक करके, उनको नरक जाने से बचाये!"

राम इसके लिए बिल्कुल न माना। कैकेयी से जब उनका विवाह हुआ था, तभी उन्होंने अपने ससुर को वचन दिया था कि उसके लड़के को ही राजा बनायेंगे—राम ने यह बात बताई।

तब वहाँ उपस्थित जाबाली नामक ब्राह्मण ने राम से कहा—"कौन पिता है! कौन लड़का है! पितरों के लिए श्राद्ध करनेवाले इस लोक में कष्ट झेलनेवाले मूर्ख हैं। परलोक कहाँ है! तुम जाकर

तब राम ने भरत को कुछ उपदेश दिया। जीवित के लिए मृत्यु अपरिहार्य है। मनुष्य चाहे कुछ भी करे, एक एक क्षण मृत्यु समीप आती जाती है। जो बूढ़ा और असमर्थ हो जाता है, वह कुछ भी नहीं कर सकता। यौवन में ही आत्मविचार करना अच्छा है। बीता समय फिर नहीं आता। मृत के लिए चाहे कोई कितनी भी चिन्ता करे, पर कोई लाभ नहीं है। कोई भी प्राणी अपनी इच्छानुसार नहीं चल सकता। दशरथ कई पुण्य कार्य करके स्वर्ग गये। इसलिए

खुशी से राज्य करो। हर प्राणी अकेला पैदा होता है, अकेला मरता है। जब तक जीवित है, यह संसार एक प्रकार का पड़ाव है। यह ही सत्य है, इसके अतिरिक्त सब मिथ्या है।"

"ये तो नास्तिक की बातें हैं। मेरे पिता नहीं जानते थे कि तुम नास्तिक हो, इसलिए ही उन्होंने तुम्हें अपने पास रखा था।" राम ने जाबाली से कहा।

वशिष्ठ ने बीच में आकर कहा—"जाबाली, नास्तिक नहीं है। ताकि तुम राज्याभिषेक कर लो, इसलिए ही उसने इस प्रकार कहा है।" वशिष्ठ ने भी राम को राज्य स्वीकार करने के लिए बहुत कहा। परन्तु राम अपने निश्चय पर अटल रहे।

तब भरत ने सुमन्त्र से कहा—"दूब घास लाकर, इस पर्णशाला के द्वार पर रखो, राम जब तक मेरी इच्छा नहीं पूरी करते, मैं यहाँ से नहीं उठूँगा।"

सुमन्त्र ने कहा—"क्या करने के लिए कहते हो?" उसने राम की ओर देखा। यह देख, भरत स्वयं दूब लाकर उस पर लेट गया।

यह देख राम ने भरत से कहा—"भाई, इस तरह के काम तो वे ब्राह्मण करते हैं, जो ऋण वसूल नहीं कर पाते हैं। यह क्षत्रिय नहीं करते। फिर मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि द्वार के पास यों लेटते हो? उठो, अयोध्या चले जाओ। राज्य करो।"

भरत नहीं उठा, चारों ओर घेरे हुए लोगों को देखकर कहा—"तुम सब चुप क्यों हो? राम से क्यों नहीं कहते?"

"जब राम कह रहे हैं कि वे पिता की आज्ञा का पालन करके रहेंगे, तब क्या किया जा सकता है?" उन्होंने कहा।

चीन की दीवार

यह चीन की प्राचीन दीवार है। इसकी लम्बाई १४०० मील है। ऊँचाई २० फीट से लेकर २५ फीट तक है। मोटाई १० फीट से १३ फीट तक है। सम्राट शिह्वान्ग ती ने यह दीवार ई. से पूर्व तीसरी सदी में बनवाई थी।
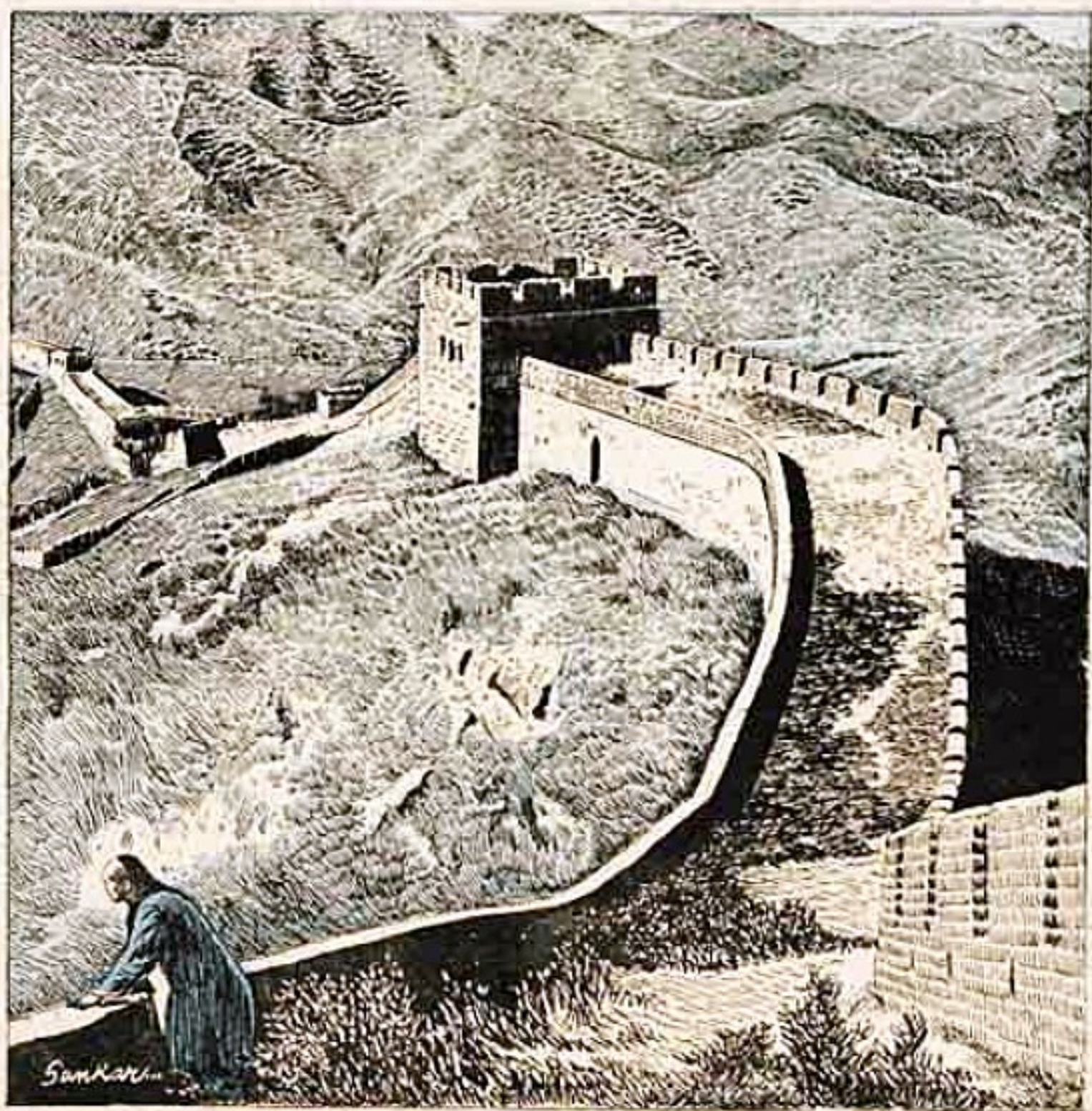
१. गंगा शरण शर्मा, झरिया

क्या "चन्दामामा" का वार्षिक ग्राहक पत्र व्यवहार करते समय अपना पूरा पता दे अथवा ग्राहक संख्या ?

दोनों ।

२. एम. बलवन्त सिंह, हैदराबाद

चन्दामामा की लोकप्रियता में किन लोगों का हाथ है ?

आप लोगों का ।

आप चन्दामामा की पुरानी प्रतियों को फिर से छाप कर क्यों नहीं दूसरों की इच्छा पूरी करते ?

"चन्दामामा" पुस्तक नहीं है । जिसके संस्करण के बाद संस्करण निकाले जा सकें । यह पत्रिका है ।

३. सरन बिहारीलाल माथुर, आगरा

क्या आप बेताल की कहानियाँ फिर शुरु से दे सकते हैं ?

अभी तो नहीं—कभी पुस्तकाकार में देने का प्रयत्न करेंगे ।

४. वेदिनराय हंसराय, खरियाद रोड़

क्या आप पहिले की तरह "समाचार वगैरह" नहीं देंगे ?

सुविधानुसार अवश्य कभी देंगे ।

५. स्वामीचरन प्रसाद, झाखट

"भयंकर घाटी" कब तक खत्म होगी ?

पढ़ते जाइये—कहानी के खत्म होने पर ।

६. हेमेन्द्रकुमार, आगरा

अभी तक चन्दामामा की कितनी धारावाहिक कहानियाँ पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं ?

एक—"विचित्र जुड़वाँ"

७. प्रकाश रतनलाल वर्मा, रोहतक

क्या आप मारवाड़ी भाषा में "चन्दामामा" छाप सकते हैं ?

नहीं।

८. कृतिवास नायक, बिलासपुर

क्या आप चन्दामामा में भी "वर्ग पहेली प्रतियोगिता" स्थापित करेंगे ?

अभी तो कोई योजना नहीं है।

८. चतुरभुज, बेन्गालोर

चन्दामामा सब से पहले किस भाषा में छपता है ?

तेलुगु में।

१०. नन्दकिशोर प्रसाद, पटना

क्या मानव चन्द्रमा पर निवास करेंगे तो वहाँ भी "चन्दामामा" प्रकाशित होगा ?

आप और हम जब वहाँ होंगे तो "चन्दामामा" भी होगा।

११. नवल किशोर, झाँसी

क्या "चन्दामामा" के प्रकाशक बच्चों की कोई और पत्रिका भी निकालते हैं ?

नहीं।

१२. एस. एम. शास्त्री, टेहटी

आप "चन्दामामा" में लेख क्यों नहीं देते ?

क्योंकि यह कहानियों की पत्रिका है।

Photo by E. Ramalingam

पुरस्कृत

सागर-सा गम्भीर किनारा!

प्रेषक :

Chandamama August '62

Photo by A. L. Syed
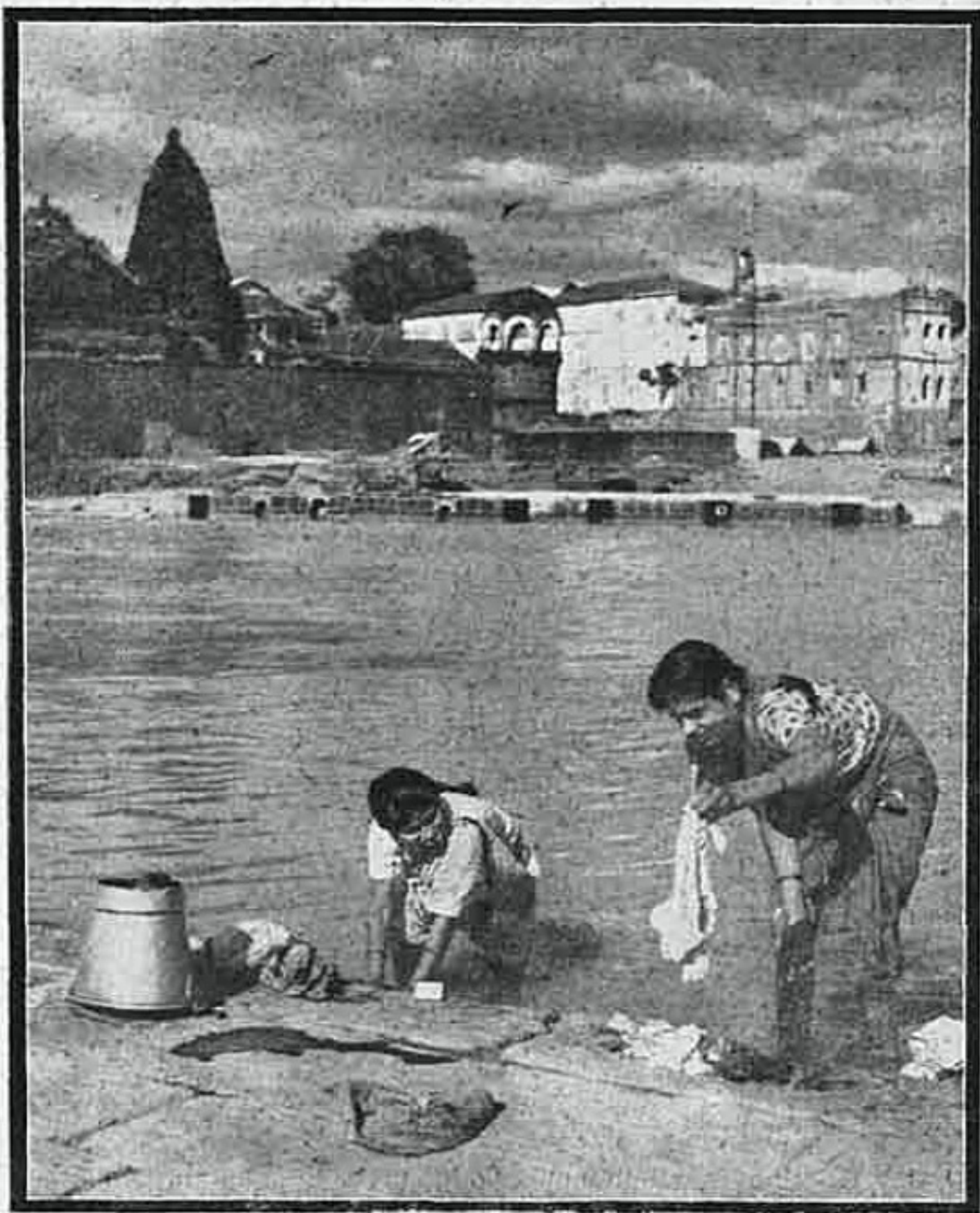
पुरस्कृत

मैल बहा ले जाए धारा !!

प्रेषक :

मनुष्य और भगवान ★

[रामतीर्थ कथा]

एक बड़े आदमी को यह जानने की सूझी कि मनुष्य और भगवान में क्या भेद है। यह मालूम करने के लिए वह एक तत्ववेत्ता के घर गया।

उस समय वह तत्ववेत्ता कहीं बाहर गया हुआ था। यह आदमी बरान्डे में एक कुर्सी पर बैठ गया और तत्ववेत्ता के आने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर में तत्ववेत्ता आया। उसके आते ही उस आदमी ने कहा—"मनुष्य और भगवान में क्या भेद है यह मैं आप से मालूम करने आया हूँ।"

तत्ववेत्ता ने उसके प्रश्न का उत्तर न दिया, उसने नौकरों को बुलवाया और उनसे जोर से कहा—"इस आदमी को बाहर धकेल दो।" वह आदमी यह सुन घबराया। कुर्सी से उठा और अलग खड़ा हो गया।

तत्ववेत्ता ने तुरत मुस्कराते हुए कहा—"यही भेद है। मैं भगवान हूँ, और तुम मनुष्य हो। अगर तुम बिना डरे कुर्सी पर बैठे रहते, तो तुम भी भगवान हो गये होते। क्योंकि तुम्हें अपने दैवीय गुणों में विश्वास नहीं है, इसलिए तुम मनुष्य ही बने रहे।"

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अक्टूबर १९६२ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ अगस्त १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

अगस्त – प्रतियोगिता – फल

अगस्त के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : सागर-सा गम्भीर किनारा !
दूसरा फ़ोटो : मैल यह ले जाए धारा !!

प्रेषक : बनवारीलाल "कुमार"
३, रिज़र्व पेट्रोलियम डीपो, ए. एस. सी, मथुरा (उ. प्र.)

अन्तिम पृष्ठ

मृतों का तर्पण करके पाण्डव, विदुर और धृतराष्ट्र, और स्त्रियों के साथ एक मास तक नगर के बाहर पर्णशाला में ही रहे। उस समय व्यास, नारद, देवस्थान कण्व, शिष्यों के साथ युधिष्ठिर को देखने आये। राज्य जीता था, पर उसको इसका सन्तोष न था।

सब को मारने के कारण, मुख्यत: यह जानकर कि कर्ण उसका बड़ा भाई था, युधिष्ठिर बहुत दुखी था। यह देख नारद ने कर्ण के शापों के बारे में सविवरण बताया।

कर्ण को बचपन में ही पाण्डवों पर ईर्ष्या थी। युधिष्ठिर बुद्धिमान था। भीम बलवान, और अर्जुन धनुर्विद्या में प्रवीण ही न था, वह कृष्ण का मित्र भी था। नकुल और सहदेव भी अपनी बुद्धि के लिए प्रसिद्ध थे। क्योंकि उन सब से उसे ईर्ष्या थी, इसलिए ही उसने दुर्योधन की शरण ली। शस्त्रों में अर्जुन की बराबरी करने के लिए उसने द्रोण से ब्रह्मास्त्र माँगा, यह कहकर कि यह केवल ब्राह्मण और क्षत्रियों को ही दिया जा सकता था, अर्जुन के पक्षपाती द्रोण ने उसे वह देने से इनकार कर दिया। तब कर्ण परशुराम के पास गया। उसने झूट बोला कि वह ब्राह्मण था। उनका शिष्य बनकर उसने बहुत से अस्त्र-शस्त्र पाये। इसी समय कर्ण ने एक ब्राह्मण की होमधेनु को मारा। यह जानकर कि वह होमधेनु थी, उसने ब्राह्मण से क्षमा माँगी। पर उस ब्राह्मण का गुस्सा ठंडा न हुआ—"तुम युद्धभूमि में रथ का चक्र टूटने पर, उसी तरह मरोगे जिस तरह मेरी गौ मरी है।" उसने शाप दिया।

कुछ दिनों तक सेवा शुश्रुषा करने के बाद परशुराम ने कर्ण को ब्रह्मास्त्र का उपयोग और उपसंहार का उपाय बताया। उसके बाद, एक व्रत के दिन परशुराम कर्ण की टाँग पर सिर टेक कर सो रहा था, एक कीड़ा कर्ण की टाँग पर काटने लगा। क्योंकि वह गुरु की नीन्द न तोड़ना चाहता था, इसलिए वह दर्द सहता गया। जब परशुराम उठा, तो उसे रक्त प्रवाह और कीड़े को देखकर आश्चर्य हुआ। इतने में कीड़ा अदृश्य हो गया और राक्षस बन गया, वह यह कहकर चला गया कि परशुराम के बाबा के शाप देने पर वह कीड़ा बन गया था, और परशुराम को देखते ही वह शाप से विमुक्त हो गया था। परशुराम को सन्देह हुआ—"तुमने इतना दर्द सहा है, तुम ब्राह्मण नहीं हो सकते। कहो कौन हो।" कर्ण ने डरकर सच कह दिया। परशुराम ने शाप दिया कि ब्रह्मास्त्र उसके हाथ में निरुपयोगी हो जाये। इतने शापों के बावजूद कर्ण महावीर बना। कलिंग राजा चित्रांगद की लड़की के स्वयंवर में जब दुर्योधन उसकी लड़की को ला रहा था, तो और राजाओं ने जब उस पर आक्रमण किया, तो कर्ण ने उन सब को पराजित किया। जरासन्ध से उसने गदा युद्ध किया। उसे पराजित करके मालिनी नामक नगर को ईनाम में पाया। ये सब बातें बताकर नारद ने युधिष्ठिर से कहा—"तुम यह न सोचो कि कर्ण की मृत्यु का कारण तुम हो या अर्जुन है। उसकी मृत्यु के कुछ और कारण हैं।"

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works,